



आदमी  
कैसे खा  
पर



सूर्य प्रकाशन मन्दिर  
बीकानेर

# आदिवा कल्याण पर

यादवेन्द्र  
शर्मा  
चन्द्र



सूर्य प्रकाशन मन्दिर  
विकानेर

# आदिवा कल्याण पर

यादवेन्द्र  
शर्मा  
चन्द्र

© नवरातन प्रकाशन बीकानेर

प्रकाशक सूर्य प्रकाशन मन्दिर बीकानेर

संस्करण १९७३

मूल्य छ रुपये

मन्त्र विद्यालय आर्ष प्रिंटिंग हाइस्कोला जिल्हा १२

---

AADAMI BAI SAKHI PAR (Novel) Yadvendra Sharma Chandra

Price Rs 6/-

साहित्य मेची  
आदरणीय श्री क्षमचन्द्र 'सुमन' को



श्री चंद्र की जय रवनाएँ

- सावन आँखा म
- एक रास्ता और
- लाग का बयान
- य क्या रूप (सम्पत्ति)
- अपनी धरती आपना त्याग

—और एक बहुत उप-दाग

हज़ार घाटा का सवार

## मैं इतना ही कहूँगा

प्रस्तुत उप-यास आदमी वसाखी पर  
व्यक्ति और उसके उत्तरदायित्व के बीच  
की स्थिति की सपपशील गाथा है ।

आधुनिक परिवेश व स-दम में हम  
उप-यास के पात्रों की मन स्थितियों का  
अध्ययन आवश्यक है ।

एक युग पूर्व यह उप-यास पथ की वशा  
के नाम से छपा था । अब य नय सगा  
पिप्त रूप में प्रस्तुत है ।

—यादवेन्द्र नामा 'चन्द्र'



## एक

उमके मामन एक कापी पडी है और कापी क पास एक दवान, जिसरी म्याही सूख गई था जमे कद निना स इसना उपयाग नहा हुआ = और यह बबल मज री गोमा के लिए ही रखी हुई है। दा चार हिन्दी की पुस्तकें और दा चार अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपयास बतरतीय पड़े हुए थे। भूर रंग के टवन-बलाय पर कहा-कही हल्के स्याही क छान छाने धार थे, जो नय नहीं ज न पड़ते थे।

कुछ देर तब वह बहुत जिम्मेदार राजनानि नता की तरह गम्भीर मुग्ध बनाकर सामन पड कागज पर आधुनिक प्रयोगवादी चित्रकारी का नमूना बनाता रहा। उमका शीपर लिया उमक—आदिगन। फिर उसके हाठा पर सूखी मुम्कान फिर उठी, माना वह अपन आपन कह रहा हा वह नी क्या आत्मा है? एन्म अजीय।

फिर उसने अपन सिर का हथेली के महार टिका दिया और लिखन लगा जीवन = पूय। आग उसन लिखा नहीं। वस्तुतः उममे लिखा नहीं गया।

वह कुछ दर तन विचारमग्न गठा रहा। फिर उमरी बलम स्वत ही चली।

जीवन + पसा = आनन्द।

आनन्द -- पसा = ममभारी स जीवनयापन।

जीवन × पसा = विलासमय जीवन।

जीवन — पसा = दुःख, चरम दुःख और नीरमता।

और फिर उसन उन सबको काटकर बड़े-बड़े अक्षर म लिखा, 'दुःख'।

मधु के माथे उमर मानम-गटेन पर एक मुक्ती का चित्र उमर आया जो किसी प्रादुर्भाव के म अध्यापिता भी छोड़ जा आज्ञा उमर प्रापण की विन्दु थी। उमर गिरवा की गह अनन नागिमा को दगा और फिर मन भी मन कुछ बन्धनता हुआ अपनी बराबरी तार उठ गया हुआ। तब ताम्र के पत्र पर उमर बसायी की लज्जत उमर मन का यथा की मानार परती हुई उस मून कमर म गूँज उठी। लज्जत उस भावहीन समुद्र के जीवन की दुग्धमरी वह ध्वनि थी जो उसने अनुराग म प्रतिध्वनिमा की भाति खरा खरावर उम पीड़ा पहुँचा रही थी। वह उमर-मा लिहका का सम्बन्ध लहर खड़ा हो गया। क्षण भर के लिए वह इतना सम्मोह हो गया कि उमर की भृकुटिया स्पष्ट तनी हुई जान पड़ी फिर उसके बहरे-पर व्यथा के गहरे काँच बादल छा गए। उसका मुँह एक म एकदम पीला-पीला-गा जान पड़ा। उसने लिहकी क भूमत हड्डूम के बने भावपक पील पत्रों को अपने दाता हाथों से पकड़ा और बन्धनता तमूरलग।

आज नीराज रेखा मे नवोन्मिल सत्य के अनाम की समरता कह दिया था। अनाम ने उस जन्म की जिसका नाम निर्वाण था एक कहानी की कटु सानोचना किसी पत्र में छपा नाम से लिखी थी। वह आराधना इतनी हृदयमयी और पक्षपातपूर्ण थी कि निर्वाण बात ही बात में बहुत नीचे स्तर पर उतर आया और उसने अनाम को एक बाहियान चित्रकार के घटिया कहानीकार बताते हुए तमूरलग कह दिया। उस समय अनाम हँसता रहा ताकि रेखा के बुद्धिजीवियों की उपस्थिति वह अनुभव न कर कि उमा इसे दुःख माना है लेकिन बाद में इस बात ने उसको समझा कि पीड़ा पहुँचाई और वह अब तक उसी तरह परेशान है।

अनाम बाबू! किसी सच्चा का मधु स्वर सुनाई पड़ा।

अनाम ने देखा—वरदा हाथ में चाय की प्याली लिए खड़ी है। अनाम

आत्मी वसाखी पर

वृत्रिम मुम्बान हाठा पर लाता हुआ बोना, चनी आओ बहा क्या खनी हा ?'

आज आपका मूड अच्छा नहीं है न, इमलिण मैंने माचा कि आपसे आना ले नू। त्थेथो न बिडकी का पर्ना रितना खराब हा गया है। और सचमुच अनाम न दखा कि मुटठी म पदें क छार के आ जान मे उसम काफी सनबट पड गई हैं। वह पर्ना भीगे कपडे को फूहड़ता स निचोडा हुआ सा जान पडता ह। उमने बरणा क प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वह वसाखी क सहार मेउ क पाम बिठ पतग पर घाजर बठ गया और चाय की चुम्बिया लेन लगा।

बरणा उसकी आर बिना त्थेथे हुए उमकी पुस्तका को उठाकर अनामारी म रखन लगी। एकाएक बरणा न पूछा अनाम बाबू मनुष्य उदाम क्या हा जाता है ?'

‘नब तुम उदास हो तउ उत्तर डन रेना।’

बरणा ने मोन धारण कर लिया और आगम पलग पर लटपर सुप्रसिद्ध चित्रकार विसण्न धानगाव के जीवन पर आधारित उपयास लस्ट फार लाइफ पठन लगा। कुछ दर तक मोना एक् दूमरे स नही बान। फिर बरदा प्याला लेकर चली गई। उसके जात ही अनाम न बरबट नेत हुए कहा बचारी।

बरणा—एक निम्न मध्य वर्ग की कुमारी बगालिन क्या। काली पर जरा मामल। इतन छोटे छाने पाव, चीनिया की तरह जस बरदा क मा राप न भी उस जामते हा लोह क बूत पहना लिए हा। भाल बड़ी बड़ी, गहरी और काली। बाल श्यामल घनाभा की तरह घने और काले और उसकी कमर क नीचे तक फले हुए। आठवी म पन्ती थी। उम्र चौदह स द्वादह पर शरीर का फलाव पूण युवती का सा। विवाह क योग्य।

अनाम के नीचे के दो कमरा के पनेट म वह रहती थी। बाप सरकारी



अभी तक अनाम न बरला की आर नहा देना था। वह उसेना बरला का बुनी रग रही थी। यह व्यवहार अगिष्टता का भी सूचक है ऐसा बरला ने मन ही मन साचा और वह कुछ अवन भी बोनी फिर आपन चलन का वचन क्या दिया था ?

पर वचन का ताड़ा भी जा सकता है।

अभिजात बग की मजी मजाई महिला की प्रदर्शन भावना लिए बरला चाहती थी कि अनाम उसे देखे पल भर के लिए देखे ताकि वह गव कर अपन मन को सुष्ट कर पर अनाम द्वारा निरंतर उसे न पाकर उमका अहकार तडप उठा। वह तनिक राय म बोनी तुम्हारे वचना का क्या मान ? तुम दूसरा की दृष्टा का इच्छा नही मनभक्त इतना दम्भ अठा नही।

अनाम तुरंत पलंग पर बठ गया। उसन बरला की आर दिया। नत्रों "चार हू"। गाना न अनिमय दष्टि से कुछ लण के लिए एक दूसरे को देना। बरला अपनी धोती का पल्लू अपनी अगुनी के चारा आर दिगन्त लगी और अनाम के बहरे पर ममभौता सूचक हमी नाच उठी। वह गान स्वर मे वाला मुझ मरे एक मित्र के घर जाना उसनी पत्नी अस्वस्थ है। बरला ! बहा नही जाऊगा तो उन्हें कितना बुरा लगेगा।

बरदा के आर्वे मर आयी वह आखा का पाउनी हुई कामन स्वर म वाली अनाम बाबू आप अपने मित्र के पाम अवश्य जाइए लेकिन इन्दु सीदी के यहां नही। यह इन्दु दीने मुझे अच्छी नहा लगती।

और वह हवा की तरह बाहर चली गई।

उसके जाने के बाद अनाम नारी की स्वाभाविक ईर्ष्या का दावकर गमीर हा गया। फिर वह बरदा के अधिकारपूण वाक्य को लेकर कई बार साचता विचारता रहा और बात म उसने निणय निकाला कि बरला उस प्रेम करती है वह उसपर अपना कुछ अधिकार ममभक्ती है तभी वह उसे



एसी आना द सबती है । तभी वह उससे एसा हठ कर सबती है ।

पाच बज चुक था ।

मद की उष्णता और जयपुर की भीषण गर्मी । न चाहत हुए भी उसने नद पानाक पहनी । कुता और पायजामा । पावा म जाधपुर की हल्की जूती । जेब म बलिबो मिल का रंगीन रुमाल ।

मज की दरवाज म स उसने एब बटुआ निगाला । बटए का रंग बाला था और वह किसी फम की भट थी और तभी सठ रणछोड़ की हवेली का नवना उसके मस्तिष्क म घूम गया । उसने तुर त अपने कमरे की लिटरिया बन्द की और पले का स्विच आफ किया और चल पड़ा ।

सीनिया क बीच बरदा भिन्न गई । उसकी छाया म बरणा और गिका-मन दाना था । अनाम ने अचभरी दृष्टि से उस देखा । उसके भावों को सम-भती हुई बरदा वाली आपकी विषमता में जानती हू अनाम झाड़ू लक्ष्मि यदि आप साथ हात तो हम बच आनंद आता । मा भी यही चाहती थी । सम्भव हा सबे ता आन का कष्ट करिगा हम प्रेम प्रवाण म जा रह हू हिन्दी फिल्म देखन ।

अनाम कुछ वह सब पहन वह पुन बोली आप बस म जाएग या तारा म ।

ना मिल जाएगा उसीमे बसा जाऊगा ।

यस जब रक जाए तब उसम बटिणगा । बरदा की बरणा नगी दृष्टि अनाम के भ्रूत हुए पाव पर जम गई ।

अनाम उस दृष्टि का नहीं सह सका । उसने जन म हजारों बिच्छुआ के टक की पीड़ा का संचरण हो उठा । उसने आवेश म तुरत साचा कि क्या वह यह कहना चाहती थी कि आप लगड हैं उतावली म गिर जाएग ।

ओह ! दया कर रही है । उसके प्रगस्त सलाट पर श्वेत वण उभर आए । उसका निचला हाठ ऊपर ब दा दाता से दब गया । भगिमा म कुछ कठा-

आदमी बसाखी पर

रता और भयानक प्रतीत हुई। बरदा स्थिरता से सहम गई और कुछ उसकी आंतरिक भावना का समझती हुई वह शीघ्रता से चली गई।

उमके जाते ही अनाम ने अपने आपका सामाला। अपने भावों और रोप पर काबू किया। रुमाल से चेहरा पाला और चल पड़ा। बसाखी की खट-खट उसे अपने हृदय पर पड़ रही हथौड़े की चोंचों-भी प्रतीत हुई।

घर से बाहर निकलकर उसने साधारण व्यक्ति की धाल से अधिक तजी में चलना शुरू किया जम वह सोच रहा था कि लिडकी में खड़ी वह काली-कलूटी बरदा उसका धारे में सोच ले कि वह कितना तज चल सक्ता है? हालांकि बस स्टापज तक उमने पीछे मुड़कर देखा भी नहीं फिर भी वह कल्पना में साहसी पुष्पा की भांति उमा विचार रहा था कि बरदा उसे लिडकी की राह देख रही है। इसलिए वह बस में सबसे पहले लपककर चला। इससे अनाम की आत्मा का बड़ा सताप हुआ।

दम में भी थी। भीटें खचाखच मरी थी। अपनी बसाखी का बगल में टाता हुआ वह एन सीट का पकड़कर खड़ा हो गया। अचानक सीट पर बैठ हुए महाशय की दृष्टि अनाम पर पड़ी। वह तुरंत उठ खड़ा हुआ। उसने अनाम का कहा बठिए।

नहीं-नहीं आप बठिए न ?' अनाम ने उह रोका।

नहीं साहब मैं खड़ा हो जाऊंगा। आपनी तकलीफ होगी।' उमने मुख पर कठना का भाव था।

अनाम विवग हाकर बठ गया। उम ममम उसका चेहरा सकोच से झुंक गया था।

## दो

प्रसिद्ध नीराज रस्ना में अभी पूर्ण गति थी। क्या-बला में जाह्ला वालाहन और सगर के घुए की घुटन उत्पन्न हो जाती है वह अभी तक नहीं हुआ था। वहाँ की उपस्थिति सहजता में मिली जा सकती थी। एक दो तीन चार अनाम न मन ही मन उस गिना भी और फिर अपने मनजर से समय पूछा। उत्तर सुनकर उसने मन ही-मा माया अभी अतिजात वग की युगल जाड़िया की भीड़ में जाणगी और मैं हनु में जमकर बातचीत नहीं कर सकूंगा। अब हनु का आ जाना चाहिए। हर पल उसके लिए युग मा बा गया। उसने हनु की प्रतिष्ठाजनित आकुलता तथा मैं चमक उठी। वह बठा-बठा चय पीने लगा।

हनु घाई। उसने मुख पर उन्नामनाच उठा। हाँ हाँ पर मुन्ना लाना हुआ वह बानी तुमने बड़ी दर पर दी मैं तुम्हारे आन की भाँगा ही छाँदा थी।'

मैं बाय की पत्नी हूँ और तुम्हें पत्र लगाने की मुनाता चाहती हूँ। मुनाता ता बहुत गुन हाँमागे।

क्या ?

बच्चा कहानी छल गद ।

जीन-मा ?

जीन की कल्या विनाय ।

अनाम न प्यार भरी दधि में हनु के मुख पर गतता उमाह की रसाभा का दया। हनु का गति प्रमत्तता है। अमयुग में कहानी का छलना उमाह गति का बल बल मफतता है।

तब क्या प्यार था ?

प्यार था हूँ कि तुम्हें क्याता क छलन का गिनना गुना है ? क्या

तुम्हारी सहेलिया न उस पसन्द किया ह ?

दो-नीन सहेलिया इस बीच आ गई थी उहाने इसे खूब पसन्द किया । लेकिन मुझे तुमसे थोड़ी-सी शिकायत ह । उमक स्वर म अदाज भर आया । अनाम ने जान बूझकर अपनी मुद्रा का गम्भीर ज्ञान की चेष्टा की । उसने शायद बनाकर इन्दु के आग रख दी ।

चाप का घूट लेकर इन्दु प्याने पर अपनी दृष्टि जमाकर वाली 'मैंने अपनी लिखी कहानी पढ़ा पढ़कर आश्चर्य हुआ, तुमने उस जतना क्या बदल दिया ? उस कहानी पर तुम्हारी चित्रकारी का प्रभाव स्पष्ट बालता ह । तुम्हारे मित्र तुरन्त जान जाएंग कि यह कहानी इन्दु की नहा अनाम की लिखी हुई ह और फिर वे मुझ और तुम्ह लेकर न जान क्या-क्या सोचेंगे ।'

क्या-क्या साधन ? अनाम के सूख हृदय म प्यार का भरना-सा फूट पड़ा । दृष्टि म चुहलवाजी उतर आह ।

वस !' उसने इन्जिम राय से बात खत्म करने का आना दी । दाना कुछ दूर तक क्षात रह जस दाना पत्थर या मिट्टी के बने खिलौने हा जा सजावट के तौर पर लगा दिए गए ह । दाना ने चाप तक पीनी बन्द कर रखी थी ।

अचानक इन्दु बोली तुम्हारे मित्र वकील साहब नहीं आय ?

वम आते ही हाने ।

'उनका स्वभाव क्या ह ?

वमे वे बहुत अच्छे आदमी है किन्तु कजूस है । हृदय के पत्थर और एकदम नीरस । एक चरित्र कहानी के लिए ।'

फिर ऐसे आदमी से मिलने से क्या लाभ ?'

उनकी यहा के बड़े-बड़ सठा म पहुच है । यदि उन्हें हम राजी करने मे सफल हो गए तो तुम्हारा पहला कहानी-संग्रह छपा ही समझे ।

इन्दु न भावावेश म अनाम का हाथ दबा लिया । अपने चेहरे का चम-

यत एतद् म न्यतो हुई कामन स्वर म बोनी तुमन भर जावन का बन्  
 निया । क्या थी क्या बना निया ? मैं प्राय साचा बननी था कि मैं एक ऐसा  
 स्त्री बनू जिसका म समाज व म समाज व बाहर प्रतिष्ठित नागरिका और  
 बुद्धिजीविया म सम्मान हा । नाग मुभ आन्तर की दृष्टि स दाव और अब  
 मुभ विवाम हा रहा कि मरी दृष्टि अवश्य पूरी होगी ।

अनाम ने बड़ी गालि म उत्तर निया मैं अपनी ओर म तुम्ह म मत रह  
 नी मदद दूगा ।

तुम्हारा ही यह प्रयास है कि मैं आज कुछ बन रही हू ।

बकील न्यान आ गय । अनाम ने उभ देखत ही उठन का प्रयास किया ।  
 दयान ने तुरन्त उमर व व पर हाथ रखकर कहा बठिण-बठिण तन्तुफ  
 की जरूरत नहीं आपका उठन म कष्ट होगा ।

अनाम का मुह उतर गया । वस्तुन अपन पर प्रतीत किए गए दया  
 के भाव उस अचछे नहीं लगन थ । दूसरा की दया उसक लिए असह्य हो  
 उठती थी । उसने गहरी चुप्पी साध ली ।

दयान निधिवार भाव स मुस्करा रहा था । अनाम की गहरी मूकता  
 का उसपर कोई प्रभाव नहीं पडा । वह उसक वचन पर जोर की धापी  
 देकर वाला अनाम आपस परिचय नहीं कराया ?

आप है इन्दु जी यहां प्राइवेट स्कूल म टीचर है और हिन्दी की नवा-  
 दिन तरण लेखिका भी हैं । आपन इनकी कहानिया पनी होगी ।

दयान ने कुत्सिता से मुस्कराकर कहा वस मैं कहानिया नहीं पता  
 पढ़ने का प्रश्न ही हा उठना पुमत हा ही मिनती लेखिन आज मैं  
 इनकी एक कहानी वमयुग म पढी । द्रीपनी का वरण प्रलाप प्राचीन  
 कथानक का आज की समस्याया म घटित करना बहुत कठिन है । मैं उस  
 बना का एक सुंदर नमूना मानता हू ।

क्या आपका मरी कहानी पसंद आई ?' इन्दु ने अपनी भुका हुई दृष्टि

तनिक उठाकर पूछा।

पमद अजी बहुत। आधुनिक द्रौपदी की दगा और उसका चित्रण पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली कि मुझे अहिंसा की कहानियाँ और उपवास पढ़ना चाहिए। लेकिन मैं जानता हूँ कि यह सब भाँचकर भी मैं कुछ नहीं पढ़ पाऊँगा। अपने धर्म से मुझे दूर नहीं। मैं एक पल के लिए भी मुक्त नहीं हूँ।

इधर इंदु की आत्मा में सब चमक उठा। अनामन अहिंसा चुप रहता उचित नहीं समझा। दयाल की मुक्त कठ से की गद्गलता इंदु पर प्रभाव करती जा रही थी।

वकील साहब इनका बर्मास ता कहानी का मोड़ देन में है। महाभारत की द्रौपदी हर क्षति को सम्पूर्ण नाराज्य के साथ समाप्तपण किया करती थी और उनकी द्रौपदी विवशता और भय से अपने आपका उन पाँच सालुप भविष्य का सौंप दिया करती थी। य भड़िए अपने भाग विलास की क्षति के साधन के रूप में उस अर्थ क्षति नारी का उपयोग करता था। यह जीवन की कितनी भयानक टेजड़ी है। उसने वरे पर दृष्टि जमाकर कहा आप सा काफी पीत हैं न वकील साहब?

केवल काफी नहीं अनाम काफी के साथ कुछ पान को भी चाहिए। वह भी मिलेगा।

तमी रस्त्रा में दा एग्ला इण्डियन युवतियाँ न प्रवर्ण किया। व गारी दुबली-मनली युवतियाँ अग्रंजा में बोलता हुआ सभी कुमियाँ पर नजर फँकती हुई एक कान की मेज पर जाकर बैठ गई।

इंदु ने तपाक से कहा इस बार मैं एग्ला इण्डियन समाज पर निखना चाहता हूँ। इनके जीवन और मन में बड़ी श्रमिया है। नियमित रूप से ईसा प्रभु के चरणा में गिरकर अपने अपराधों के लिए क्षमायाचना करना और उसी गति से अपने निजी अपराधों में वृद्धि करना, य दो विराधी बातें

१. यस्मिन् मातङ्ग उषः कृताः सः साधारणः ज्ञानी सः सः सः — अत्र १

[illegible]

पताप का मनुष्य मम । वो नई धातनी य प्रथमा निर्दिष्ट मम ।

दरिद्र ग्राह्य न कर्त्तव्य वा गच्छाद्युपमर्त्य कथं चरन्तीति मुनिर्वाचयत्  
एवमस्मात्प्राप्तं ह । अत्रानुसृत्यैव वा याजना ३ ?

यात्रना है एा प्रराणन-अम्या मानन की ।

यह धारा का धारा है। "धारा न मरना न रहा यह धारा  
बिना धारा का है। भार्य छलाम कोई लमी यात्रा यात्रा जिम्मे  
गहा मा गाना हा जाण ।

‘जीवा म पयउ सता घनान का दष्टिराम बहा तर गीर ॥ धान  
माव्य धापदी जरा-भी वृषा म हम बग महारा मित्रा । विगेष म ददु  
जीवा एर बहानी-समष्ट छपवाना चाहता हू । मुभ विरास भी है  
नवी बहानिया नाम कहत पगल करणे ।

दयान प्रदयवाचक दष्टि म कमा इट्टु को श्रीर कभी अनाम का जगता  
 ॥ उमरी पनी दष्टि जो दूसरा व अनम् के साथ को महजना स पह  
 चान नती भी तुरन् साड गई वि अनाम इट्टु स प्यार करन लगा है श्रीर  
 यह इट्टु के लिए बड़ी स बड़ी रिक्क उठा सक्ता ह ।

मैं दलील हूँ वलील भी क्या जिसकी स्वभाव को तुम रस्ती रस्ती भर पहचान हो महाबजूस अत्रिद्वामा और मदा चीरना रहने वाला। मुझे कुछ नहीं चाहिए मुझे चाहिए अपना लाभ। मुझ नाम का तारा दोख जाए तो मैं आकाश में पहुँचने में भी नहीं चक्का।

दयाल जा ! अनाम तनिक आवग म आ गया । उस दयाल का यह व्यवहार जरा भी रचिबर नहीं गया । ँदु व सामन उस अपमानित करने का उमका क्या उद्देश्य हो सकता है ? वह ममभ नहीं मवा ।

अनाम न कहा फिर मैं काई आय उपाय दूंगा । मुझे ँदु जी का कहानी-मदह छपवाना ही न । आप नहीं जानत, बुद्धि का समुचित विकास और प्रामाह्न न मिलन स वह कुटिल हा जाती है ।

प्यान लापरवाही से उठ गया एक्यू अनाम । और देखिए इटु जी आप बुरा न मान मैं प्या अपनी तिजागी से निवास नहीं सकता हू । प्या मरी आत्मा ह परमात्मा है । सच बहू परमात्मा म भी बदरर ह ।

दयान इस तरह बना गया जस उसन यहा आकर अपना समय ही खराब किया ।

इटु न घणा स मुह जिकवाकर कहा आपक बहुत अच्छे मित्र है । मैं कहनी हू कि एस मित्रा से मित्रता रखना क्या जरूरी है ?

अनाम न करण स्वर म कहा प्राणी का मूल्यावन परीक्षा म ही हाता है । तनिक तुम चिंता न करा म सब ठीक कर लूंगा । सब ठीक कर लूंगा । भला । यदि यह चाहना तो अपना काम बनवा सकता था ।

इसने धाद व दाना बाहर निरन ।

अनाम की बमाखी की खट-खट उन कानाहून म अपना पथक अस्तित्व रखनी हुई सबको स्पष्ट मुनाइ पढ रहा था ।

## तीन

दयाल व चरित्र के बारे म एक ही वाक्य कहना अधिक उचित होगा कि वह कती हुई अगुना पर पोताव तक नहीं करता था । केवल धन-संग्रह और उसकी बुद्धि व अतिरिक्त उसका मन म दूसरी बात नहीं आनी था ।



[illegible]

'हमरी कहा मिनी है ? वस्तुन बात कुछ और ही थी। यह नौकरानी जितनी मस्ती थी, उतनी सस्ती नौकरानी दूतन पर भी नहीं मिल सकती। फिर भला दयाल उसे कस निकारना ? वह अपनी पत्नी के लिए रही मे रही फन लाया करता था। जब एक दिन विद्या न रोप मे कहा तब उम निम्नी ने अपनी आम्बे भिचमिचाकर कहा यह रोग आदमी का क्षय करके ही रहता है। 'यय म स्पया प्ररान करने की क्या जरूरत है।'

विद्या पर पहाट दूट पडा। उसने अपनी भयात्रान दीप्तिहीन आम्बे मे अपन पनि की ओर दखा फिर मुके यहा मे चना ही जाना चाहिए। मरा क्षय निश्चित है फिर जीवन क प्रति सम्माह पसा ? तब विद्या के चहर पर मयानन छायाण टाल उठी 'तुम मुके जहर न्कर क्या नहीं मार दत ? तुम मुके ज्यय ही क्या तडपा रह हो ? आभो तुम मुके जहर लाकर द दा।

दयाल परयर की मूर्ति की तरह अचन गडा रहा।

१. ईश्वर तुम्हें सबुद्धि दें। यह स्पया कुछ काम नहा आएगा। आपनो हाना धन नोलुप और हान्यहीन नहीं होना चाहिए।

दयाल न दुगुना स विद्या की ओर दखकर कहा 'ममी तुम्हें जीवन की गहराद का जान नहा पमा नितन महव की चीज है इसे मैं ही जान सकता हू। फिर यह मगमग मूखता ह कि हम उस वस्तु को बचान के लिए अपन धन का अपयय कर जिमका बिनाश निश्चित है।

विद्या अपन पनि का उत्तर मुनकर उमाप्ति हा उठी ओह ! यदि कोई मरा बनगा निकान लेता ता भी मुके इतना पाडा नहा हाती जितनी तुम्हार इस वाक्य से हुई है। पता नहीं तुम्हें क्या हा गया है ? तुम इतने बल्ल क्या गए हा ?

वह बिलकुल माधारण स्थिति म वाला मुके कुछ नही हप्पा में बिलकुल ठीक हू। तुम्हें धय रखना चाहिए और मेरी बान को समझने की कोशिश

करनी चाहिए। मैं झूठ नही बोलता। पमान जान क्या खच नहा कर  
सकता मैं।

क्या मैं मरूगी ? उमन पूछा।

नहां-मही।

फिर तुम क्या करके मुझे अरुण हस्पताल में भर्ती करवा दत ?  
मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि मैं अच्छी हो जाऊंगी। डाक्टर भा एता ही  
बहता था। उमन अपने समीप पड़ी चादर को अपनी दायां मुठ्ठिया में  
बीच लिया जैसे वह जीवन को छोड़ना नहीं चाहती है।

गान की तरह उमकी पलक के आगे चहुँकदमी करता हुआ दयालु  
वाता क्या जीवन का मय है इश्वर है सुख है गति है। उसका दुः  
पयाग का फल बुरा है। मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता किंतु अब तुम पर  
पमान रख करना भी व्यर्थ सा है। हजारों क्या क राज क वा भी  
तुम्हारे स्वास्थ्य में जरा भी अंतर नहीं आया। मैं चाहता हूँ कि अब तुम  
निमी श्वता की मनीनी माना। वह एक पल स्वर पुन माना क्या  
तुम कुछ जिन के लिए पाहरे नहीं जा सकती हो।

विवेक हा विद्या अपने पीछे चली गई। उम जिन स्थान में थीर था  
पर गद। गार माना हुआ मान रहा था पीली गीत का जापरा भा  
बनिया हाता । आग में मैं पीना का प्रयाग ही गत कर दगा। और  
उमरी आगा में लुप्तता नाच उठी। वह अपना पना क पन पर पय पर  
कर बंधन उठा पना न मुझे समझा माना माना ना मानता त पर  
मर ता तीन भी क्या का पन न ग यदि मैं श्वता कभी और पन  
वान नहा बगा ता यश बर मरा पर छात्र जाना ? कभी रमा श्रुता  
भा तानायर मिड न जाना है।

और उमन तीरगता का पुकार। तीरगता पय जानकर पना न  
ग। वह अपना कमर पर माना हाथ चलाकर नित उछल गछल कर

आदमी बमाखी पर

बाबा, तुम्हारी कितनी तिन की तनखा बाकी है ?

दा माह की ।

'तम बीच तुमने क्या-क्या नुकसान किया ?

बकील साहब इम बीच मेरे हाथ म मिक एक काच का गिलास  
टूटा ।'

मिक एक ही ?'

हा माहब ।

आठ आन कम हो गए ।'

लेकिन सरकार काच का गिलास छह आने म खुला बिकता है ।

नया बिकता है जानती हो नया गिलास बरार हाता है । उसके  
चलन की कोई गारंटी नहीं । मरा छह माह का पुगना गिलास या और  
अनि तू नहीं तोड़ती तो वह कमी नहीं टूटना ।

बबारा नौकरानी खुप हा गई । दयान न अपनी सफाचट मूछा पर  
अगुनिया का नचाकर कहा आज स मैं तुम्हें छुट्टी दता हू । पंद्रह रुपया  
माहवार मुभें बन्त लगता है । मैंने अपन पटासी की नौकरानी म बात-  
चात कर ली है वह पाच रुपया म घर की सफाई और रतन साफ करन  
का तयार है ।

पाच रुपया म हा ।' नौकरानी न विस्मय से कहा ।

मेरे ब्यान म वह भा अधिक है । एक आत्मी क बतन अधिक नहा  
हान । दा पनव भपकाई कि उसका काम समाप्त ।

नौकरानी जलती हुई अपन रुपय नेकर चली गई ।

कुछ तिन म बिद्या का भी दहात हा गया । न्याल न उसक लिए  
आमू वहाण मच्च या भूठे यह कार्र ननी जान सरा । जमन उमके पीछे  
( ग्यारह ब्राह्मण भा जिमाए । कुछ दान कम भी किया लेकिन उसक जीवन

की गति में कोई भी परिवर्तन नहीं आया।

बाद में दयाल ने इन्फैम टक्स आफिसर से मिलकर और रपय कमाया। कुल मिलाकर उसके पास तीन लाख के करीब रपय हो गए। उसने अपने व्यक्तिगत लाभ के पीछे राष्ट्र का भारी नुकसान किया। वह सठ और आफिसर से मिलकर लाखा का मामला हजारों में तय करवा देता था।

अधिक रपया आन के धान उसका मन इस पने के प्रति ऊँच-सा गया।

नया इन्फैम टक्स आफिसर दयाल के हर मामले का विगाड़न का प्रयास करता था। निदान दयाल एक वकील से एक अच्छा पठान हा गया। वह औरों को रपया उधार देने लगा। पाच सौ का सात सौ निलवाना पाच-पाच रुपया सबड़ा याज लेना हजार की चीज पर पाच सौ रपया देना यही था उसका धंधा। यही उसका व्यापार। फिर भी वह नियमित रूप से कुछ दर के लिए काला काट पहनकर कचहरी जहर जाता था।

हसीम उसको महान बताप और मुक्त मिनता था।

दयाल की मित्रता अनाम से भी विचित्र दंग से हुई। अनाम का कुछ रपया की आवश्यकता थी। किसीने उस बताया तो वह उसके पास गया। दयाल ने एक अपरिचित का निमयता से उधार मागत देकर उसमें बहुत प्रभावित हुआ। उसने व्यवसाय का पूछा। उत्तर पाकर वह धाना आप चित्रकार और गयन है बहुतो कमगियन नहा। क्या आप मुझ जना मकन है कि आपकी मानना कम कितनी है ?

यहा हागा पन्द्रह सौ रपया।

मिफ पन्द्रह सौ रपया। और आप मुझसे कितनी बड़ी रकम अर्थात् १० हजार रपय मागत आ गए ? उसका स्वर आश्चर्य में हुआ हुआ था।

दण्डा भगो बड़ी बन्नि निमला का विवाह २ मुझ रपया का मन्त्र जहन्न है। मैं आपको पास बगो आना नकर आया हूँ। अनाम ने जानना

आत्मी बसाखी पर

म कहा ।

मकन जसी गन्गवली भगवान के मामन अच्छी लगगी । मैं एक सूत-  
वार हू मेरा काम एक चिकित्सक से भी अधिक चतुराई का है ।  
चिकित्सक अपने प्रयाजन की चीज की ही जाच-पड़ताल करता है पर मुझे  
अपने मुक्किल के हर पहलू का देखना हाता है । मरी यह पनी दृष्टि  
मनुष्य के अंतमन की प्रत्येक गतिविधि को सुरन्त माप सती है ।

मुझे रणछाड बाबू ने आपके बारे म बताया था । वे आपकी प्रगसा  
करत थे । व आपके बहुत उत्तर बतात थे ।

मरी प्रगसा मरे हृदय म दया जगान म सबका धममय ग्ही है । मैं  
एक सूतवार हू जिसका धम सत्य और ईश्वर है—पमा । हाताकि मैं  
इश्वर की पूजा करता हू । मरी रसोद म जिस मैं आजकल मन्दिर बना  
दिया हू भगवान शिव का एक छाना-सा लिंग है । हर राज मवरे मैं  
उसकी पूजा करता हू ताकि मेरी आत्मा दुरल न हो । वह कुछ कर सका ।  
उसकी दृष्टि अपने कान पुरान कोर पर जम गई जिसकी गल्ल पर तल  
की चिकनाहट चमक रही थी ।

लकिन मरा नाम आपको बरना ही होणा । अनाम न अपने गन्ग  
पर जार दकर कहा । फिर वह मसी चलाई का अपनी अगुली से कुल्हने  
लगा ।

तीन हजार की जमानत लिना दा ।

किन्की ?

रणछाड बाबू की । व जमानत दे देंग मैं स्पया दे दूगा ।

वे अभी कप्ट म है । उह आपम भय है कि कही बदन पर स्पया न  
पहुंचा ता आप उनपर तुरत नालिश कर न्गे । आप उनकी इच्छत धूल  
म मिला देंग ।

दयाल अट्टहाम कर उठा । उसकी जगनिया जसी भयानक हसी ने

अनाम का भयभीत कर लिया। वह नागन बालक की भाँति दयालु को देखने लगा।

‘जब रणछाड़ बाबू जिनके पास नामा रख है तुम्ह नहीं दे सकत तब मैं तुम्हें रख्या बस ताल सकता हूँ ?’

‘किस ब सेन देन का व्यापार नहीं करत।’

‘तुम माने हो पस वाला की अटवतगजिया को नहीं जानत। व तुम्हें रख्या नहीं देंग। व तुम्हारी जमानत नहीं दग। क्योंकि तुम एक गगन चिन्तक नखब हो जिसकी आय का कोई भरोसा नहीं। तुम नहीं जानत कि हर रख्या दन वाला आदमी अपना आसामा की ओर लगे रहता है। अनाम बाबू कुछ गिरवी रखन को ? और उसरी हडि अनाम के चहर पर जम गई।’

‘कुछ नहीं। अधिक-स अधिक मैं अपने आपका गिरवी रख सकता हूँ। हा यदि आप मर कुछ चित्रा का रखना चाहें तो मुनी-मुनी रख सकते हैं। उसकी बाणी में यथा सहज उठी। आमा में वरणा बमर उठी।

‘जब तरह बात नयी बनगी। मैं पता कि मैं अपनी आमा मानता हूँ तब निराला कर रहा हूँ सनता। उसरी मुरा का प्रत्यक्ष भाव था बाणि।

‘मैं आपका नाम रखता हूँ।’

‘व अमिनय व्यथ जाग्या। मैं अपने रख्या का जमाना चाहता हूँ। बमर मायाग्य पायी का भजन भागिर्या नग्य रग्या क्योकि एक भजन व कामन आनन्द काय था करना। चरित वर उसका पराग हवा रग्या की राग्य नग्य नया नग्य। ‘मर माय मरि मैं उग्य आनन्द बनता चाहता हूँ तुम्हारा नग्य रिग्या। ‘मरिग्य मैं माना चाहता हूँ जय चाहता हूँ। माना तब ग्या धान है जो ग्या मा तुम्हारा रिग्य बनता है। वर ग्या ग्या मुर रहा चरित वराराग्य इन व्यापारिया ग्य कुछ

इमानदार हात हैं। अतः मैं तुम्हें मकान पर भी रफिया द सकता हूँ वगैरें  
मकान की कीमत पाँच हजार है।

मैं आपसे कहा न मरे पाम कुछ नहीं है।

फिर मुझे शमा करना मैं आपकी कोई भी मवा नहीं कर सकूँगा।

अनाम का हृदय दयान के प्रति घणा स भर उठा। उस गृह तक गुम्स्ता  
आया कि वह उसके मुँह पर यूँ २ पर वह दाना माहम नहीं कर सका।  
दूना-दूना-मा उठा घोर चन पड़ा। अमी वह दगवाजे तक पत्रवा ही नहीं  
था कि दयाल न उसे फिर पुकारा मुनो।

अनाम के तन मन स खुशी का लहर दौड़ भर।

मैं तुम्हें पाँच सौ रफिया द सकता हूँ किन्तु एक गत पर।

अनाम बसाखी को मजबूती स वगैरें म दवाकर जल्दी जल्दी दयान  
के पाम आया। उतावली से बाता मुझे आपकी हर मभव गत मझूर है।

तुम्हारे जा भी चिन बिकगे उन सबरर कापी गइठ मरा हागा उह  
मैं ही बच सकूँगा। अपना मारा रफिया पहन मैं नूँगा।

मुझ मझूर है।

फिर चन आ जाना मैं बागज बनवा कर गवूँगा दस्तखत करके  
अपनी रकम ले जाना। वह इस तरह बोन रहा था जम-बोर्ड-उपेक्षा स  
बान कर रहा था।

हमारे तिन अनाम न जब रफिया के घर म प्रवण किया तब दयाल एक  
माधारण मुवनी को बज ले रहा था। बसाखी की 'गट-गट' मुनकर दयाल  
भीतर स बाता अनाम बातू वहीं पर रुक जाइए।

अनाम एक टूटी-भी कुर्सी पर बठ गया। कुर्सी की पीठ म लगी दीवार  
इतनी गली थी कि अनाम को घूणा हा उठी। एक छीरे म कुछ सटे हुए  
फन पड़े थे। वह इस वजूम पर गभीरता से विचारता रहा जिसम पसा  
का सम्मोह था। जो रात तिन श्रीरा की दौनन को अपने घर म लेवना



चाहता था । जिसका 'म जीवन म न कोई दास्त था और न कोई अपना । सरसता स उस चिह्न थी । वह कभी भी जीवा की कामल भावनाया या नारी क प्रणय पत्र का लहर चर्चा नहा करता था । दयाल का यन्त्रि सत्रा धिक् प्रिय विषय कोई था ता वह था ऋण दना । वह ऋण का लहर घटा विचारा करता था । जिस प्रकार मिमी को सौ रुपया देकर एक हजार कमन करन चाहिए—'सम वह अपनी बुद्धि का कौशल बताया करता था । वम वह कसाई की छुरी स अधिक निदय और पत्यर म भी अधिक कठोर था । मि तु वचना का बहुत पक्का था । जा कह न्या उम वह पूरा करता ही था । चहर पर किसी प्रकार क भाव नाए बिना वह अपने मुखकिता (कज दारा का वह इसी तरह स सम्वाधन करता था) क मकान कुडर करवा लता था उनका सामान बज म कर लता था या उह जल मिजवा देता था । 'स मामते म वह थाडा भी उदार नहीं था ।

अनाम । भीतर से न्याल न पुकारा । अनाम की यसाखी की खट-खट गूज उठी । वह भावाद्धतित-सा उस कमर म घुसा जिसम घटाई विछी हूद थी । जिसम एन पतनी-राम्मी युवती बठी हुई थी । अनाम का ध्यान उस युवती की ओर गया । दयाल 'सकर माला यह अनामिका है दासी कुछ कज लेने आई ' । तुम्हारी और इसकी स्थिति एक-मी है । यह अपन मालिक का एक हजार रुपया देकर उसकी गुनामी स मुक्त होना चाहती है । बचारी छोटी जाम की है ।

अनाम न मन-ही मन सोचा उसका गुनामी स तुम जसे आदमी की गुनामा बहुत मयानक ह । भगवान 'सकी रभा कर ।

तुम चुप क्या हा । दयान न पूछा ।

मैं साथ रहा था कि आप नितन न्यातु हैं ।

वह जार स हसा आत्मी भूरी प्रणसा करन म माहिर होना है । अनामिका तुम बाहर बठा ।

आदमी बसाखी पर

इसके बाद दयाल न गहरा मौन धारण कर लिया। वह गहरा मौन अनाम के लिए असह्य हाँ उठा। दयाल ने अपने काले कोट की जेब से कागज निकाल और अनाम को हस्ताक्षर करने के लिए कहा।

अनाम ने हस्ताक्षर करने के पूर्व 'न्याय के कागजात का देखना चाहिए।' पर वह तनित स्मित-सा हुआ। बोला, 'तीन रुपया प्रति सप्ताह व्याज।'।

'किमी वस्तु के अभाव में यह कुछ भी नहीं है। मैं यह रुपया केवल व्याज के मोह में दे रहा हूँ। कभी-कभी हम मूढ लोग व्याज के मोह में मूल का मिट्टी बना देते हैं अर्थात् एक भी रुपया वापस नहीं मिलता।

लेकिन यह व्याज साहूकारी नहीं है। अनाम के स्वर में गिन्यात माँ थी।

साहूकार का एक तो अपनी इज्जत का भय सत्ता बना रहता है। दूसरा उसका मरने पास कुछ-कुछ गिरवी होना ही है। तुम्हारे पास क्या है? कुछ भी नहीं। एक गरीब चित्रकार और नखक ही न मरान है और न साना। निरपेक्ष। वाप भी है वह भी धीमा। पाच-पाच और छह-छह बहिनें, तुम स्वयं लगडे। कभी साचा है तुमने कि तुम्हारी कला अनेक होती है। वह साधारण व्यक्ति की समझ में नहीं आती। एकदम विचित्र एकदम नई। कौन खरीदगा उस? मुझे तुमपर दया आती है।'

अनाम का अपनी जिन्ना अमह्य सगी। कहा वह उत्तेजित हो गया तो बना-बनाया काम बिगड़ जाएगा। इसलिए उसने तुरन्त हस्ताक्षर किए और बसाखी का बगन में दबाकर जल्दी से वहाँ से निकलना चाहा किन्तु दयाल ने उस राक दिया रुपया नहीं लोग? वह बाहर बैठ गया। अनामिका भीतर धाँद। दयाल ने उससे पूछा 'तुम काम करना चाहती हो?'

'हाँ।

किन्तु तनखा लागी?

रानी सप्ताह और तीस रुपया।

दयाल न अनाम स कहा, तुम्ह एक नौकरानी की जहरत है । है क्या हागी हो । यदि मरा बात मानना चाहत हो तो अनामिका का रख ता तुम्हारा सख काम कर दगी राखी-बपटा और काम स्पष्टानकर । वारा मजूर है ।

हा मजूर ।

फिर सा स्पष्ट । उमन मी-मी के पाच बहुत पुरान नाट निरानकर अनाम का लिए । अनाम आमार प्रणन करता हुआ बना गया । अनामिका दयाल दृष्टि में अनाम का लगती रही । उसका अतस में हम तक्षण के प्रति दया की किरण फूट पड़ी । अचानक उसका मुह स निकल पड़ा बबारा बितना सुन्दर है मार की तरह उसके पाव में प्रभु न बसर रख दी ।

दयाल न कुटिल हमो हसकर कहा अनामिका तुम्हारा नाम तुमस मिलता जुनता-सा है । सुना यह है अनाम का पता । उमने एक कागज अनामिका के हाथ में दिया । फिर टहकर बट वारा तुम्ह एक हजार रुपया टके रुपया ब्याज पर दिया है । इसलिये हर सबेरे तुम्ह मरा काम सुपन में करता हागा । जबकि तुम एक गरीब लडकी हो इसलिये तुम मुझे ब्याज नहीं दे सकागी मैंने उसका भी प्रबन्ध कर लिया है । जस ही तुम्ह अनाम तनला द बस हो तुम मुझ पदह रुपया पहुँचा दना । या रखना एक सुंदरार याज के मामा में बहुत ही घटिया हाता है ।

अनामिका न हाथ जोड़कर कहा, मैं स्त्री हूँ मुझ गण अपन पुगन मानिक स भ्रम बना रहता था वह मनुष्य मरे तन और मन स खाना था फिर भा मैं उस कुछ नहीं कहती थी । मैं जिन भर काम-काज में लगी रहती थी थक जाती थी । सबिन बहा समी मुझ कामचार कहत थे । अनामिका की आशा में आसू आ गण । उमने अपना मुह अपन हाथों में छुपा लिया ।

वह पापाणवत् इमान न जान क्या काप-मा गया । कनाता हुआ व वारा तुम जाया, तुम जाया तुम्ह कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं

सर टीक हा नाएगा । आखिर तुम्हारी मिफारिग मठ हुकुमचट न की है  
मेरा पना मुरमित ह और तुम आनाद हो गद । 'बस बस ।'

अनामिका अपनी आग्या का पाछनी हुद चली गई ।

न्याल उन बागजा का एक मजबूत किंतु पुरानी लाह की तिजोरी म  
गवन लगा । वह तिजारी हर रंग की थी जिमका रंग जगह जगह से उतर  
गया था और जिमम नाटा की गहिया जबर और मान के छाट छाटे पास  
पड़े थे ।

न्याल ने एक बार उन मरपर बड़ी आत्मीयता से हाथ फेरा और  
तिजारी बन्द करके विचित्र दष्टि से कमरे का देखना हुआ बाहर चला गया ।

## चार

इसके पश्चात् अनाम का बकील दयाल और अनामिका से सम्बन्ध  
बढ़ता ही गया । जब दयाल ने उसका सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ और निकट-  
तम हो गया तब उसने जाना न्याल अत्यन्त बठार और कृपण मनुष्य है ।  
उमक हृदय में प्यार की एक लहर भी नहीं है । वह पसा के लिए किसीका  
निहाज नहीं रखता । नैन-न के मामले में न कोई उसका मित्र है और न  
कोई अपना । किंतु अनाम यह भी स्वाकार कर सकता था कि दयाल उसके  
प्रति उतना बठोर नहीं है जितना दूसरा के प्रति । हर माह व्याज पट्टचान  
के बाद वह उसके साथ उत्तरता का व्यवहार-वर्तव करता है ।

न्याल का अनाम के रूपका का बड़ा खतरा था । उसने सोच लिया था  
कि अनाम इस तरह जीवन भर उसके रूप्य नहीं दे पाएगा । अतः उसने  
अनाम के चित्रा की एक प्रशंसी का आयोजन किया ।

जयपुर के एक कालेज का हान उमक लिए भाग लिया गया । प्रशंसी  
का उद्घाटन गिन्ना मंत्री से कराया गया । गिन्ना मंत्री ने उसकी बना की

मराणा करी हुआ कदा। अनाम जो की कता म मितिव प्रयाग है। कवन  
रगापा व द्वारा मातव जावन का समित्यति व भी प्रभायगाता रूप म  
उत्तरगाताय ५। उताइन निवहार को धर्मी धार म एव निव व पाव मो  
रूप मने की पायणा की। व निव था मनाममगा ।

जिम निव अनाम का रूप मितव उता निव रूपान वनगया और  
अपन पूर पाव मो रूप व ति। अनाम धार्मिक या ति दयान अना उमने  
हार् सो रूप व न मितिव व इगपर राजा नना हुआ। अर अनाम न  
अधिव अनुराध निया नर रूपान जिग गया। बावरा समय पर रूप करन  
वा क्या घनी घना है। मैं नुम्हाग जाता हर् इगवन का बचाया था नुम्ह  
जीवन निया था। नुम्ह ता मरा रक्म जिना माग नना धार्मिक थी।

दयान धार्मिक ' मुभ रूपया नो मने जगरत है। धर्मा दा रूपान भा  
छू गए हैं।

अनाम । रूपया एव एमी धाज है जिसकी सत जगरत हर समय  
हराण का रहती है। मुभ भा रूपया का सत जगरत है। तुमम नकर विमा  
और का दूगा।

धार्मिक अनाम का रूप दन पद। रूपाल न जात हुए कदा कन पर  
आकर अपता हैडनाद न जात। दखो अवनना मत क्याकि य जितन म  
खोर हात है व हृदय के वक्त मल और कान हात हैं। उनका इमानदारी  
पर मरामा करन बाता कमा न कमी पछताता ही है।

दयाल व धर्मे जान व बाद अनाम बहुत उत्साह हा गया। बहिन व  
विवाह म उसने अपन कई मित्रा से थोडा थोडा करके एक हजार रूप लिए  
ये व सभी उसका पत्ना खीचन। सभी को थोडा-थोडे की आता है। कुछ  
पाव की उम्मीद है। इन सब बाता स वह बडा यश हा गया।

रास्त में वह विचारता जा रहा था यदि मैं मित्रकार नहीं हाता  
कितना अच्छा हाता ? वही अच्छी नौकरी मिल जाती हर माह तनखा

मिलती। लेकिन उस समय मेरा कोई सम्मान नहीं करता। सभी मुझे एक साधारण व्यक्ति समझकर उपेक्षा की दृष्टि से देखते। आज मुझे लोग एक कुशल प्रयोगवादी, आधुनिकतम जीवन का एक अच्छा चित्र मानते हैं और मेरी कला का समझने वाले मेरा बहुत सम्मान करते हैं। मेरी कहानियाँ का अलग प्रभाव है। चित्र शली का। दाना क्षेत्रा में धीरे धीरे मेरी धार हा जाएगी। मेरी वहिन ?

विचार चरचिन का भाति पल पल में घल्ल रह थे।

हा उम पढी निली मावुक वहिन का दहेज के अभाव में कितना साधारण पति मिता है। एक बत्तक बी० ए० पास कलक। जो न तो अधिक सुंदर है और न अधिक चतुर। फिर माँ उसके लिए डेढ़ लाख रुपये खर्च हा गए। खर्च करता ही जा रहा है।

फिर उमका सम्बन्ध उच्च मध्यवर्ग और पूँजीपति वर्ग से दिनादिन बढ़ रहा था जिससे उमके खर्च में वृद्धि हो रही थी पर आय में नहीं। वह जो थाड़ा बहुत त्याग और पत्रा से कमाता था उसमें से एक पसा भी नहीं बचा सकता था। उसे दिन प्रतिदिन अपना रहन-सहन ऊँचा करना पड़ रहा था। उस अपना होटल का खर्च बटाना पड़ रहा था। हर तरफ से खर्च बढ़ता हा गया और आय के बटन का कोई जरिया नहीं बना। निदान वह बहुत तंग हा गया। जब त्याग न उसपर तनिक भी रहम नहीं दिखाया तब वह अपने घर में आकर टूटा हुआ पड़ा गया।

धाडी दर के बाट इंदु आई। हम बीच इंदु की जान पहचान अनाम से काफी हा चुकी थी। अनाम उसकी ओर तीव्र रूप से आकर्षित था। वह अपने जीवन की विषमताओं व अभावा को विस्मृत करके इंदु के समक्ष— मैं अत्यंत भाग्यशाली और सुखी चित्रकार हूँ। जिसे तुम चाहती हा—का प्रदर्शन किया करता था। इस मिथ्या वाता से उसके अंतः का सुख मिलता था।

‘ममो ध्याताम दुर्गताया न पिग ह्या या । उम तग ग्या या रि जम  
 हो उगा मिता का म बात का पाता मगता रि उमरा पात मो म्या मिन  
 है यम हो य ध्यान रपया का माग कर बडग धोर न मिनन पर उम एक  
 यईमान मानेग ? पर क क भी ता क्या ? दयाव जग ह्मयान ध्यामी  
 क चगुन न यचार निरता भा मत्र नहा । बहा म उम पना मग गया  
 रि उम पाज रपया मिनगा ? कम क उमर पीछ-पीछ रता धाया ?  
 भूत है भूत । उमन घणा म न्याव क नाथ पर मूरना बाता पर इदु क  
 भागमन न उम लगा नही करन न्या । बह हमना हुमा-मा बाता ‘पाज  
 मग ध्यानक धाना कम हुमा ? मगिन ता है ?’

बड धनजान बा रं हा ?

क्या ?

पाक सौ रपय क्या धवन ही ह्मम करना चांत् हा ?

धाह । वह गभीर हो गया यह कस न सक्ता है इदु तुम्हार बिना  
 अनाम न रपया का उपमाग नही कर मक्ता । बाता कहा कनागी ?

‘बीधरी रेन्ना म ।

मैं अभी तयार होता हू ।

अनाम न भट से कपड पहने धीर बन पडा । बीधरी रेन्ना एक उच्च  
 स्तर का रेन्ना है । बहा अनाम के पच्चीस रपय खच हा गए । मन से  
 न चाहत हुएभी उसन इदु के समक्ष अत्यंत दरियादिनी का परिचय दिया ।

रात को वह लौटा । अनामिका भोजन बनाकर बठी हुई थी । समीप  
 बरदा अपन अन्तस की जलन का परिचय दे रही थी । यह कह रही थी,  
 यह इदु अनाम बाव का अपन प्रेम जान म फसा रही है । एक साधारण  
 अध्यापिका का चरित्रकसा हा सक्ता है वह तुममे नही छिपा है अनामिका  
 दीना ?

अनामिका न बरदा का समझाया किसी पर लाछन नगाना टीक

आत्मो वसाखी पर

नहीं है। सभी आदमी अच्छे होते हैं और सभी बुरे।

लाछन, नहीं अपना लेना य नमैं और य अध्यापिकाएँ कभी भी चरित्र की अच्छी नहीं होती। अपन अनाम बाबू बड़े भाव हैं, वह दूध की मीठी-मीठी बातें म आ गए। तुम याद रखना एक न एक दिन यह अनाम बाबू से अवश्य छन करगी।

वसाखी का खट् खट् मुनत ही बरना चुप हो गई। अनामिका न इस तरह का भाव बनाया जम वह बहुत दूर से अपन आपस खाई हुई है। बिचाड़ा के पास खट् खट' आन क साथ ही बरना उठकर चली गई। अनाम न महजता म पूछा भर आन ही चल पड़ी।

‘हा मा पुकार रही है।

अनाम न कुछ नहीं कहा। वह भीतर चना आया। वसाखी का दावार के सहारे लड़ा करके वह कुर्सी पर बैठ गया। मुट् पर हाथ फेरकर उसने एक गन्ना निदवास लिया।

अनामिका न आवर पूछा खाना लाऊ।

नहीं।

क्या ?

मैंने बान्ना लाना खा लिया।

फिर आपन मुँह कहा क्या कहा ?

तुम भर म नहा था, इसी बीच दूध आ गई और मैं उसके साथ चला गया।

बाबा र बाबा नु न आपपर क्या जादू कर दिया है कि आप उसके झगारा पर नाचने लग। उसे तुरन्त बरना की बात याद हो आई।

अनाम न हमेशा काइ उत्तर नहीं दिया। वह अथ मरी दृष्टि से अनामिका का व्यवहार रहा। अनामिका पर उस दृष्टि की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह निश्चिन्त भाव से बाबा बुरा न मानें ता मैं आपका एक बात



रहती है।

१७। १ अनाम का दुष्ट म गुरुभना थी।

आप हनु म जाने कर मोहित।

जग हृदय बाणा व मया नाग का भाभना लिया है। तमा प्रवर्त  
हृदा अनाम का। बर लख्य अनामिरा व मुग्धगा हल अना का दमना  
रहा।

तब वर नाति न धारा में रिमाण विवाह कम कर गाना हू मने  
पाग पगा नहा है। भगे कोई स्थाया और म छो आय नया है। अना नाग  
मज्ज नहीं है। अनामिरा कुछ बाव दमर पन्न ही अनाम फिर बाव उग  
आज मुभ पाव मौ गग मिन साचा बहिन व विवाह का कुछ बज बुरा  
ऊगा। कुछ मित्र का बाडा-बाडा लख उनका धीरज दगा। पर गगम  
दयाल बीच म ही आ लखना और सब कुछ छीन कर न गया। अनामिका  
एसा दयाहीन आदमी मैंन पहा भी नला लखा। मैंन उग क्या कि तुम  
आधा न ना पर नहा। पूर अपन पाव सौ स्पए न विण। अना अना कि  
मुभ उन नागा व सामन विनना अभिन्ना हाना पडगा।

अनामिका ने अनाम की बात का कोई उत्तर नही लिया और वह चली  
गई। जान जात उमरा चला गभीर हो गया।

दूमरे ही दिन सवेरे अनामिका न दयाल के पास से अनाम को लाई  
सौ रुपये नागर द दिए। अनाम का हृदय उस दासा व प्रति श्रद्धा स  
नर आया। उसन कुछ कहना चाहा पर अनामिका ने मनाने लिया।  
बस इतना ही कहा आप आकर दयाल बाबू व कागज पर हस्ताक्षर कर  
आइएगा।

उस घटना से आज तक दयाल अनाम के प्रति उतना कठोर नही बना  
जितना श्रीरा के प्रति बनना था। अनाम का जावन पूववत ही था। अना  
मिका उसकी दासी बरदा उमरी पडोमिन और हनु उसकी प्रमिका।

वम य ही जीवन क इदगिद गैडने वाले चरित्र ।

## पांच

प्रमात की स्वर्णिम किरण ऊंच ऊंच मसाना की गीवारा का घुम्बन लेती हुई नाच रही थी। अनाम न मूरज की ओर पड़न वाली बिडकी का खोना ताकि रूप कमरे में झा जाए।

अनामिका अभी तक नहीं आई थी। इसर कुछ गिना से उमकी तयी-यत ठीक नहीं थी।

वरदा ने किवाड खटखटाए। अनाम ने जगल में बसायी देवाकर द्वार राना। बरदा चाय लाई थी।

अनो लीदी की आना ह कि जय तक वह न आए तय तक मैं आपकी चाय का प्रयत्न कर लिया करू।

अनाम न कोई उत्तर नहीं दिया। वह छुपचाप अपनी कुर्मी पर उठकर चाय पीने लगा।

बरदा बोली आप हमारे साथ सिनमा नहागण पर बटु के साथ ।

बीच में ही अनाम बोला बरदा मैं और इंदु किसी काम के लिए नहीं चल गए थे।

वह लट्ठी हुई बोना मच क्या नहीं कहत कि मुझ जमी काली लडकी के साथ आपको सिनमा देखना अच्छा नहीं लगता।

यह बात नहीं है बरदा मैं तुम्हारे साथ कई बार सिनमा देख चुका हूँ।

मच क्या बात है? आप मेर साथ सिनेमा देखन चले थे कि मैं आपका जगरास्ती ल गई थी?

तुम जमा भी चाहो मोच सकती हो इसकी तुम्ह स्वतंत्रता है। बरदा ने किनीने हत्य को नहीं दुखाता। सच कहूँ दंडु में प्यार करता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि वह मुझमें गुण रहे। क्याचित उसका गुण करने में तुम्हारा अपमान भा हो सकता है पर मुझे विश्वास है कि तुम उसका बुरा नही मनाओगे ? उम मरी मजदूरी समझाओगे ।

वरण का अनाम में लगे गंगा की आवाज थी । वह स्वयं अनाम पर अपना अधिकार समझती थी । साबती थी कि यदि वह जोर लगाएगी तो अनाम उसमें प्यार का स्वीकार कर सकता है । किंतु अनाम अनाम अनाम में उसमें भ्रम का ताड़ लिया । वह विस्मित-भी ठगी-भी अनाम का देखती रही । अनाम अपना दुष्टि का बलती निर्या पर जमाने वाला वरण मेरे स्नेह को गवत मत समझना हम मजान में एक गरीफ यकित होकर रहना चाहता है । तुम्हारे जाबा (पिता) और तुम्हारी माँ मुझे अपना छोटा समझत है । मैं उनका विश्वास का खाना नही चाहता । मैं उनका हृदय पर आघात नही पहुँचाना चाहता ।

वरण प्यारा वरण बनी गई ।

अनाम नापरवाणी में अपने आपसे बोला यह काली नडका अपने आपका क्या समझती है । मुझे पहन ही कुछ गंगा था कि यह मुझे अपने जान में फसाएगा । छि न रग और न रूप ।

उमने उठकर अगर्शनी की और फिर गुमावान में बनी गया ।

अनामिका भी गई थी । वह स्नाक जनावर काय खाने लगी । आज उमने हर रंग की माँगा और नारा नाउज पन्न रगा था । वर उमका चर्रा मर्रा मर्रा जा रगा था । गार गार पूछन पर भा अनाम उममें मारा-प्रद उत्तर नही पा रगा था । वह अनाम का यह कहकर पाद रगा था कि वह सीमा है उर पर का निर्यात है ।

अनामिका अनाम का निर्यात का विषय था । यह नागे रम्यमया-मी उमने सम्मुख मर्रा था । गार जवना प्रान अनाम का मस्तिष्क में अना-

आत्मी बसाली पर

मिका का लेकर घूमा करता था। अनामिका बीस वष को पार कर रही थी। उसने उस बम्मी प्रेम और परिवार के बारे में बानचीन करत नही देखा। वह शान और मौन रहती थी। जब बम्मी अनाम का उदाम देखती सब वह उसका उशसी को दूर करने का प्रयत्न करती थी। अनाम ने अनामिका को तभी हमन मुस्करात दखा था।

एक बार अनाम ने अनामिका से पूछा था तुम्हारा गहरा मौन मेरी चिन्ता का कारण बन जाता है।

आप मरी चिन्ता न कोजिए अनाम बाबू कुछ ऐसी स्त्रिया होती हैं जिनके जीवन में घोर एकांत के अनिश्चित कुछ हाना ही नहीं। चरम दुख उनके जीवन का प्रतिरूप होता है।

उन धाना से मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। अनामो ! क्या तुम्हारा विवाह हो गया ?

नहीं।

फिर तुम विवाह क्या नहीं करती ?

अनामिका के चेहरे पर तरस मरी हसी बिम्बर बह एर दामी के साथ कौन विवाह करेगा ? फिर मा के आचल पर नया बनन ? अनाम बाबू मा का कलक उमकी मानान का भा बनान कर देता है। और फिर मैं मा को छानकर कही मा जाना नहीं चाहती। वह पीडाग्रा के मामले में धरती माना है।

अनाम ने दखा कि अनामिका के चेहरे पर अवसाद की घटाए उमड आई है।

आप बार बार पूछा करत हैं मेरे बारे में जानने की इच्छा रखते हैं चाहकर भी मैं अपने बारे में आपका नहीं बताना चाहती।

क्या ?

आप चित्रकार और लेखक हैं आपके बारे में लोग कहत है कि आपमें

मनुष्या बूट-जटार मरा हुआ नरिन मैं लगा नहीं ममभवा । मैं इतना ही जानती हूँ कि कनारा माँ पर मायागण मनुष्य जाना है ।

नरिन तुम्हारी माँ व नील माँ पाप दिया ?

वह अपना पाप का शस्त्र तो राग माला । मैं वषट्कार हूँ मर गार का वार्ध पाप नया और नया मरा माँ मुझ पर बनाना चाहता है । मायागण म उग गे । न कनारा था वह भी वह गड । उमा हृदय पर भस्माभाषा

अनाम न तुम्हें प्रश्न दिया फिर तुम अपना माँ का स्तना मवा कर करता हो ।

कहाँ माँ है धम गीति ।

इस उत्तर न अनाम के मस्तिष्क में अनामिका व नरिन छात्र की रचना कर दी । वह अनामिका व मुझ और दुःख का यक्ष ध्यान रखन गया ।

गुमावान का रिवाज बाल माथ ही बगानी का रणगात मुता । पत्नी । अनामिका ने तुम्हें चाय की ट अनाम का मज पर रख ली । अनाम न बढत ही कहा अब तुम्हारी तबीयत खराब थी तब तुम क्या क्या छार् ?

नरार बढ बढ मन नहीं गया ।

नरिन तबीयत अधिक खराब हो गई तब ?

तब अपने आपका ईश्वर के सहार छोड दूंगी । वह तुरन्त बात बन्द कर बोली आपका दयाल बाबू न बहनवाया हूँ कि आप रणगाड बाबू क यहा चले जाए ।

मैं ! क्या ?

वे दूध की पुस्तक रणगाड बाबू द्वारा छपवा दया । आज सवेर के वाँ के मुझ अपने एक मुवकिल के यहा जात हुए मिन गए थे । अचानक मनुष्या तानत हुए बाल जस व मुझ सवेरे दस बात का कहना भूल गए थे ।

अच्छा कत तो उहाने साफ इकार कर लिया था । कह रहे थे कि

माना बनाने की योजना बताओ ।'

आप इटु को लेकर रणछाड़ बावू के यहाँ चले जाइएगा । मैं समझती हूँ कि आपका काम बन जाएगा । इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानती ।

बड़ा विचित्र आदमी है । अनाम न धीरे से वहाँ और फिर चाय पीने लगा । क्या उस राक्षस के मन में भी इस दामी के प्रति ? एक प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में छाकर नाचने लगा ।

वह चाय पीकर तुरंत इटु के यहाँ जाने को तत्पर हो गया । अनामिका को उसने माना न बनाने के लिए कह दिया । जब वह इटु के घर पहुँचा तो इटु की विधवा माँ खाना बना रही थी । उसकी वसाखी की खट-खट सुनकर उसने भीतर से ही इटु को आवाज दी । इटु ने उसे ऊपर आने को कहा । वह धीरे धार साँपिया चढ़ता हुआ वहाँ पहुँच गया । उसने साँस फूँक ली । वह धम में एक कुर्सी पर बैठ गया । इटु ने उसके बंधन पर हाथ रखते हुए कहा 'तुम्हें ऊपर चढ़ने में बड़ा कष्ट होता है ?'

अनाम ने इटु की ओर देखा । उसकी आँखा में दया भगारे-सी दहक रही थी । वह मन ही मन गुस्से में भर उठा पर ऊपर से स्वाभाविक स्वर में बोला, 'नहीं नहीं मुझे खरा भी कष्ट नहीं होता, तुम एक गिलास पानी का पिलाओ न ?'

उसने पानी इस तरह पिया जिस तरह अत्यन्त प्यासा है । पानी पीकर उसने एक गहरी साँस ली । साँस लेकर वह बोला 'तुम्हें स्कूल कितने बजे जाना है ? क्या तुम आज छुट्टी नहीं ले सकती ?'

माँ में छट्टी पत्र से ही नहीं रखी है ।

फिर तुम तयार हो जाओ हम रणछाड़ बावू के यहाँ जाना है । तुम्हारी पुस्तक भी इस हाँ प्रस्तावित हो जाएगी, क्या मेरा दायर ? ।

इटु की आँखा में चमक आ गई । वह भीतर के कमरे से कपड़ें बदलती है बोला 'कभी-कभी घटनाएँ बड़ी तबी से घटती हैं जिनपर हम आसानी



बता सकती है। तुम्हारे अंतमन के भावा की मेरी बाणी नहा बता सकती।'।

बसाखी की खट-खट की फिरगूज हुई। अनाम अत्र विलकुल रोमाटिक मुद्रा म द्रु के ममीर खडा था। इद्रु ने उमका हाथ पकडा और मद्रु स्वर म वाली तुम्हारे कलाकारा का ममाज आजकल हमारी बडी चचा करने लगा है। वे जनन करने वाले प्रतिद्वन्द्विया की तरह हमारे बारे म अनगल आलाप आर निराधार छिछती प्रेम चचाए कर रह हैं। अनाम ' क्या एमी बकवास सुनकर तुम चिंतित नही हात ?

अनाम ने कोई उत्तर नही लिया। वह इस चचा को यहां पर खाम कर दना चाहता था। वह इद्रु की मा क समझ किंचित भी छिछता वनन को तयार न था। क्योंकि वह जानता था कि आर्थिक रूप मे अवनम्रित इद्रु की मा इद्रु के विवाह म कम इच्छुक है और योगी बहुत है भी तो वह एमा घर चाहती है ना उम नीकरी करना न छुडाए। अनाम यह भी भला भाति जानता था कि उमके पास कोई सरकारी नीकरी नही है वह करना भी नहा चाहता, आबर एज भी हो गया है और फिर जो स्वतंत्रता और सम्मान इस काम म है वह किसी भी काम म नही।

अनाम और इद्रु घर से बाहर आ गए थे। अनाम बात करने के मूड म था अत उमने टक्ती ली। टक्ती म बठन क साथ ही अनाम न कहा अत्र बनाया तुम उम समय क्या कह रही था ?'

मैं कह रही थी कि क्या इन निराधार चचाआ स तुम परेशान नही हात ? उमने नितांत सहज भाव स कहा।

नही।'।

'क्या ?'

क्याकि इन चचाआ म सत्य का आधार वालता है। क्या तुम मेर और तुम्हारे सम्बन्ध के बाव इस कोण स नही साचनी कि हमारे अग्रन्त



गहरा मर्मरूप है ?

मर्मरूप प्रेम का रूप है न यन्तु जल्गी नहीं। व मर्मी मित्रता की मर्मा भाव मान है।

मर्मरूप ही आग तत्पर मर्म प्रेम का रूप माना है। न प्रेमि चित्त व्यति मित्रता है। मर्म वान है मित्रता वन्ती न। मर्मता प्रेम का रूप धारण करने बिना न पवित्र उधन म उध जाती न।

फिर मर्म गायधान है जाना चाहिए। मर्मु क मुन पर बचता था जा प्रनाम का वन्त घटो गया।

अनाम क मन म आया कि आज वन्तु का अवन प्यार क बार म स्पष्ट कह द पर उगता मानम नग हुआ। प्रेम का रूप उमान उम यूह पन और मूलता का परिचायन गया। यह ता एव अन्नाम ही चीज है। जिस वह भी जानता था और मर्मु भी जानती थी।

बाग।

टक्की मुड चली। इन्दु न अपनी मर्न लूमरी प्रार कर ना। अनाम भी विचारा म स्वी गया। आज म पाच वय पहुच वह तावपुर म था। म्मी प्रकार उमरा प्रतिमा स प्यार हुआ था। प्रतिमा उसपर गान दनी थी और म्मी प्रतिमा क बिना एव पल भी नहीं रह सनता था किन्तु प्रतिमा क माता पिता एक रागद्व क साथ अपनी बटा का बाधन का तयार नहा हए। दस बात का पता जब अनाम क मिना का लगा तो उनक मन की घणा मडक उठी और उहान किचिन बधाए गढ ता। एक दिन न ता एक कहानी ही बना डाली। अनाम का हाथ अपनी टाग पर चला गया। वह टाग पर हाथ फरने लगा। रणछोड बाव की कोठी था गइ थी। टक्की स्त्री और अनाम और इन्दु लाना न दग्वान का भीतर सूचना पहुचाने क लिए कहा।

एक भव्य काठी। सगभरमर और सीमट की बनी। राजसी सामन्तो

जम ठाठ और रौनक ।

वे शाना विस्मित दष्टि से देखन रह ।

रणछाँवा बाबू न गहर आकर मस्मिन मुख म उनका स्वागत किया ।  
वे उह एक आनागान कमर म ले गए जिसका इंदु एकटक देखती रही ।  
इम उम एम व्यवस्थित और आबुनिक सामान स मज्जित कमर अत्यन्त  
प्रेम हा । रणछाँड बाबू उसकी जान को समझ गए । तनिक मुस्कराकर  
बाबू इंदुजी कमरा पसन् आया ?

दन्त ! उमन इम तरह कहा जस बाइ उच्चा अजीब वस्तु खबर  
खुशा म भूमता ह ।

यक्यू ! आप बठिए अनामजी । आपको पड़े हान म कष्ट हागा ।  
रणछाँड बाबू न स्नेहमिक्त स्वर म कहा आइए इंदुजी मैं आपका मकान  
सिंवाऊ ।

इंदु न प्रश्न भरी-दाष्ट स अनाम की ओर दखा । रणछाँड बाबू पावने  
टुण प्रात, आह ! अनामजी मरे मकान का पहल ही देख चुके हैं । व्यय म  
चन्त-उतरन की तननीष दह नही मनी चाहिए ।

अनाम के मन म आया कि वह इम सठ क वच्चे के गिर पर उमांगी  
ने मार । क्या दयता बन रहा है ? लगडा हुआ क्या अभी तुमने अधिक  
चन सनता ह । भाग सवता ह ।

पूणा स उमना भुम विकृत हो गया किंतु वह नहीं बोला और न ही  
सिमोन उमक चहर को लेगा ।

एन्टु और रणछाँड बाबू बाहर चने गए ।

इन्टु रणछाँवा बाबू क ऐश्वर्य म बहुत प्रभावित हुई । प्रत्येक कमर की  
अनाम क साथ-साथ व इंदु की बहानिया की प्रशंसा कर लिया करत ५ ।  
अनाम क चिन्ता के बारे म उनकी और इंदु की राय परस्पर मिल गई  
जिमम इंदु का गौरवानुभूति हुई । उस लगा कि उमना माचना सही है ।



## अनामी बसायी पर

अनाम न बोच म ही कहा 'रणछोड बावू !' इनकी कहानिया बड़ी अपाल करती हैं। सजन के मामले म इनका हृदय अनोखा है। शला कथा-वस्तु और मार्मिक चरित्र चित्रण म य नवीन पीढ़ी के कलानगरा के साथ सहजता से बैठ सकती हैं।'

मैं आधुनिक साहित्य पढ़ता रहता हू। साहित्य की ओर मेरी गहरी दिलचस्पी है। मैं अमूमन राजस्थानिया से भिन्न हू। मेरे जीवन का मूल ध्येय पसा नहीं आनंद है। आनंद भी सोद्देश्य। उद्देश्यहीन आनंद म मेरा विद्वास नहा। मे चाहता हू कि एक प्रकाशन-संस्था खालू।'

यह ता बहुत अच्छी बात है।

मैं कुछ रपया लगा सकता हू। पहले मेरा एक पत्र निरालने का विचार था अर मैंन बहु विचार बदल दिया है। दयार ने मुझे इंदुजी के बारे म बताया। उसे स्त्रिया के मामले म बहु निरा कारा है। प्यार और रोमांस पर बहु सबथा बग्गी से बातचीत करता है। लेकिन इंदुजी के बारे म उसने गहरी तो नहा। फिर भी तनिक दिलचस्पी लिखाई। इनकी एक कहानी की प्रशंसा भी की।

इंदु न गव स कहा उस कहानी को मैंन बड़ी महनत से लिखा है।' ऐसा कहते समय उसकी दृष्टि अनाम पर जम गई। अनाम पूर्ववत गमार था जम उमके चहरे पर बाइ नए भाव नहीं आए हैं।

रणछा बाबू न बात व सिलसिले का जाइत हुए कहा इस राजधानी म बस मक्का लसक हैं। बड़े-बड़े मठा सामंता जमीनारा तथा मंत्रियों की जी दुबारा करने बात, उनके लख निखकर आजीविना कमान वाले, उनकी भूठी प्रशंसा करके अपने मासिक और दैनिक पत्र चनान वाले तथा उच्च ध्येय म साहित्यकार बहुर पसा एठने वाले। वस्तुतः यहां साहित्यिक व्यापारी बहुत अधिक हैं। और तो और यह राजधानी साधना को कम पर लिखावट की बड़ी दुकान है। ऐसी स्थिति म मेरे द्वारा प्रकाश मंगा

वा सवानन कुछ यक्तिया की दष्टि में निहित स्वायों का प्रतीक माना जा सकता है किंतु इसमें ऐसा कोई स्वाय नहीं है। मैं विगुद्ध रूप से साहित्य की सेवा करना चाहता हूँ।

हमारा मतलब है आप बड़े पमान पर यह कार्य करना चाहते हैं।

नहीं। उसने गदन की भटका देकर कहा मैं पित्रहात बड़े रूप में उसे नहीं पालना चाहता। मैं केवल आपका और इन्दु जी की सभी पुस्तकें छापन का विचार रखता हूँ। मैं आपके चित्रा का एक एनरम तथा आपकी चित्र गली पर विभिन्न आलोचना के लेखों का संग्रह छापना चाहता हूँ। यह आश्चर्य है कि मैं चित्रारों के लेखन दोनों में एक सा अधिकार रखता हूँ।

अनाम न पुरत कहा यह तो और मच्छा रखा। स्थानीय नवकों को तो नवक की सेवा देना ही साहित्य का अपमान है। रणछोड़ बाबू महा के नए चिंतन मनन के नाम पर शूय है। न इंग्लैंड फायड को पना और न माकम की। जग हैबलान एलिम यामू काफरा समुग्रत बकेट और मान के बगचित नाम भी नहीं जानते हाग। भवा इनके पंड बिना कोई साहित्यकार जाबित रह सकता है। और पिक्का बानगाग पाल गोगा आमिनीराय शुभा टमोर आदि चित्रारों के बार में यह विन्कुल नहीं जानते।

रणछोड़ बाबू न अपना सहमति प्रकट की।

इन्दु ने पुरत बात के प्रसंग का बन्ध लिया फिर मैं समझती हूँ कि बात पक्की हो गई। अब मैं अपनी सहलेखा में कहना संग्रह के प्रकाशन की बार बार में घोशणा कर सकती हूँ ?

बगल !

इसके बाद अनाम प्रकाशन की एक कपड़ेवा बनान का वायदा करके उठ गया हुआ। जान जाने रणछोड़ बाबू ने इन्दु में कहा आप मुझे फोन

आत्मी बमात्मी पर

सम्बर ३०५२ पर बभी भी याद कर सकती है।'

बमात्मी की चट खट फिर मुनार्क पनी। बाहर आत हा इन्दु के चहरे पर उन्नाम बिखर गया। वह चहकती हुई बिडिया भी मधुर स्वर म बानी अनाम रणउट बाबू की उम्र भरे म्यात म ताम पत्तीस की होगी। बला के अच्छ पारखी ह ?'

गायन। उता-मा उत्तर दिया अनाम न।

छ

धर अनामिका अधिन अस्वस्थ हा मइ थी इसलिए सबर की चाय बरना लाया करती थी। अनाम का उमक साय का यवहार जरा-सा भा मुन्नर नहीं था। वह हर समय एमे भावा का प्रग्नन किया करता था जस वह बरना स दूर बहुत दूर भागना चाहता हे। यही कारण था कि जत्र बरना गल चद्र की कमल अथवा माविनी की घचा करती ता अनाम उमक बार म नम तगह उत्तर दिया करता था जमे य बातें जीवन म काई महत्व नही रखनी हैं। यथ ही समय का खराब करती है परंतु कल सबर एक विचिन अक पनीय घटना घट ग।

अमा तब अनाम विस्तर पर साया हुआ था। बरना न चाय की प्याली की मत्र पर रखकर उम जगाया। अनाम न अपनी अलसाइ आत्मा स बरदा का न्ना। हमना की अपना आज बरना कुछ अधिक अच्छी लग रने थी। उमके गाला म उल्नास की परछाइया नाच रही थी। उसकी आत्मा म प्यार की गहराइया तर रही थी। उमका क्षीर उसे इतना काला नहीं लगा जसा सना लगता था। आज उसे उसम भी सौन्य की ज्योन्सा विरीण होनी हुई गी। उसने बान खुले और नीचे कमर तक छितराए हुए थ। अनाम उन सबका एकटक दखता रहा। उसने क्षण भर के लिए

विष्णु मी सुखं ल्याय १११ करत। त्या मरु मायुना म यना म  
१११ ते। सुभ ममभ १०१ वा १११ करत।

यस्याः पुत्राणां नृणां विभुः समस्तकः । सुखं तदा गीत-  
 मथा वा ध्यातव्यम् । । एतच्च सुखं न विद्यायाः अथवा नैव ध्याना-  
 यतः तदा मयः वा ध्यानात् नैव वदत इत्यत आह । यः मया मया राजा श्री-  
 माधाराय नः । । यः मया मया ध्यातव्यः काः नः ।

यः समस्तं न जानाति पञ्चमं ।

आत्म के रूप में आकार ले लेता है। उदा. छत्र के नीचे शिखरों के आकार पर आत्म के पुनर्निर्माण का प्रारम्भ होता है। १० मन्त्र पर आत्मी दृष्टि दी जाती है। उदा. वसा हि उमरी ताव घट्टी न गद ॥ श्रीर व हवा का तन्त्र तज श्रीर उन्नत तज भाग ॥ १० श्रीर वरुण तज भागन हुए तय्यर मन हा मन तज ॥ है।

तत्पश्चात् वरुणि भगवता नमः कथा । बह्वर्णि गरुडो मातुषा पत्न्या  
रत्ना जगत्तुल्यमिति हा नमः ॥

राशि की गन्ती निम्न न उमका काफी सम्यक् किया। उमका आधुनिक  
श्रीर वचना जनां र्णा। वह स्वस्व दृष्टि म कन का घटना पर विचारन  
लगा। उस र्णा रि वग्ना म मिफ एर जगान नडरी का आधुनिक प्रार उत  
जना =। प्रम म प्रस्ताहन का अभाव पारर वह घणा स मर गद प्रार उत्तन  
उस हानन म उमका लगन तन कह दिया। अनाम १ एर आतावन की  
भाति अपनी आतावना करव अपने आपका धय दिया कि र्मना उस भी  
बुग नही मानना चाहिए तथा उस वरग का एर नादान लडरी समझकर  
धमा कर रेना चाहिए।

उसने ऐसा ही किया तथा बसाम्बी लेकर वह नीचे चाय पीने चला गया । रास्ते में बरला का मा मिली । उन्होंने साधारण तरीके से कहा बरला आपसे नाराज है अनाम बाबू ।'

अनाम न हसन का प्रयास करत हुए कहा वह पगरी है।

कामा म निवत्त होकर वह इंदु के घर की ओर चत पडा। आज मौसम अच्छा था। मवरे-मवरे वात्स निकल आए थ जिनसे आवाग म मृग-छीने दौड रह थे।

जब वह इंदु के घर पर पहुचा तब इंदु उमे नही मिनी। इंदु की मा ने बताया कि वह रणछाड यात्रु के यहा खाना खाने गई ह। अनाम का मन गह स भर गया। उसन माचा कि वह उस छोटेकर कस अकेली रणछाड बात्रु क यत्र चनी गड ? हठान उसने मुह पर दुख की परछाइया नाच उठा। इंदु की मा न उसक चेहर के मावा को ममभन का प्रयास नही किया। वह अपन आचन को ठीक करता हुई बोनी कल इंदु की बपगाठ के गायन रणछाड बात्रु दम उपनदय म उस अपनी मनपसद का ताहफा खरीद कर दग। वह उनके साथ बाजार भी जाएगी और बापहर तब लौंगी ?

अनाम ने खामांगी से मुक्कराने की चेष्टा की। वह उखडे हुए स्वर म बोना, वह घ्राण ता उमे वह दीजिएगा कि आज रात वह मेरे साथ खाना खाएगी।

## सात

वह तत्काल लौट आया।

घर म धुमन ही उमन लेया कि बरतु न अपन कमर क आग कायले म उमरी बसाखी का मीठा चित्र बनाया है। मन म राप के हात हुए भी उगन उमके प्रति नापरवाही निखाई। वह खट-खट करक ऊपर चढा। अप्रत्याशित उमने अपने पावा के नीचे सगडा लिम्हा हुआ न्खा। उसन अपने एक पाव से उस गन्ध को कुचल लिया। वह जान गया कि यह हरकत



चरण के अतिरिक्त किसी की नहीं हा सकती ।

वह पलंग पर कपड़े खोकर पड़ गया । तभी टाकिए ने पुकारकर एक चिट्ठी दी । घर की चिट्ठी थी । अनाम को घर की चिट्ठी पढ़ने का सैनिक भाँ शौच नहीं है । वह जानता था कि अभावग्रस्त जिंदगी की एक ही भाषा है । कुछ इन गिन गब्द है । एक ही भाषा है कि रपया भेजो ।

एक बार उसने वह चिट्ठी रद्द दी लेकिन फिर उसने पत्नी आरम्भ की । छोटी बहिन ने लिखा था—मया । हम यह कष्ट में है । तुम गान्धी महोदय पर भाँ सौ-सकाम रपया नहीं भेजने ? अभी भी क्या चित्रकारी हुई ? तुम कही सरकारी नौकरी क्या नहीं कर रहे ? बरा साँचा मैं बनी हा गई हूँ छोटी बहिन बस बही हाने वाली है । भाँ रात दिन हमारे विवाह की चिन्ता में सूखकर बाला हो रही है । हमसे उनकी दुदगा नहाँ दगी जाती । और एक तुम हाँ कि थोड़ा बखार परसेस में पड़े हाँ । यह कला सवाँ दिन परम्परा की थाँठ में बाँ है ? घर का हर हर गन्ध एर हर पल के लिए गरम और तुम बहाँ पर नाही जीवन दुबारा यह कहाँ पा इन्साफ है ? अमाँ तुम्हारा एक मित्र मायाँ बाँ उनका हाँ कुछ तुम्हारे पार में कहाँ उनसे हमें जमाँ कि तुम सम्मान और जिम्मा गुण क पाँ बाँ अपना परिवार बनाँ बाँ भाँ बचिन्ता कर मरने हाँ । नवन समाज में माँ माँ तुम्हें आत्मीय विनम्र है और गण तीन बहिनें प्रणाम ।

पता न भजाँ ताँ न भजाँ पर धनोँ तुम्हारा बाँ समाचार बखार है लिखा बरा ।

मुग्धाग बहिन  
सारा

पमाँ ! पमाँ ! ! पमाँ ! ! !

यह बहिन मायाँ 'य' पावन समझने है कि मैं यहाँ पर लगे कर रहा हूँ । मैं हाँ जानता हूँ कि मैं क्या जाँ रहा हूँ ? मैं क्या - 'मरिच' मैं सरन जाँव

की आत्मा और उद्देश्य को छाडकर परिवार की चक्की में पिमकर अपना अस्तित्व मिटा दू। नहा मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे एक महान चित्रकार बनना है और मैं अवश्य बनूंगा। और यह मित्र ? जन्मा प्रश्न अनाम के आगे नाचा। उसने घूणा से मुह चिक्का लिया, य मित्र गानु का काम करता है। उह भरा मुन्नी जीवन पमन नहीं। खुन सरकारी नौकरिया कर-करके अपन का बचन हैं और परिवार की सेवा करके दकियानूसी विचार वाल बडे-भूटा की महानुभूति ग्रहण कर लत है। छि गिरगिट कही के। किन्तु मैं भी अपने मित्रा के हक में अगुआ नहीं। और उमने कुछ घटनामा का विश्लेषण करके जाना कि उसने अपन ध्यनिगन स्वायों के कारण अनन प्रयन मित्र को हानि पहुचाई है। उमने किसी भी मित्र पर काटून बनाना नहा छोडा हर नास्त पर कहानी निखी। उनके वास्तविक रूप को विवृत करके उसने उनकी मनचाही जिल्ली उडाई। फिर वह अपने दान्ता से अगुआई की कम उम्मीन रख सकता है ?

सीचे में बरना की मा चिल्लाई बारह बज रहे हैं और तू अभी तक सोई हुई में बरना। आरी बरना उठ। उठ न।

बारह। अनाम चौंका। उसने पत्र का पाडकर फर लिया। 'इंदु की बल बपगाठ है। उसने साचा रणछाड बाबू उस मनपमन तोहफा दगा। और वह ?'

उमके पास पसा ही नहा है। फिर इटु उसके बारे में क्या समझेगी ? मने के अभाव में वह उसके प्यारका गलत मूल्यांकन कर लगी। साधगी कि जो मट नहा द सकता वह हृदय क्या दगा ? यह पूजीवादी युग है। आदान प्रदान पर सम्बन्ध का चिर रहना अवनिमित्त है। फिर मनुष्य का अहम सावजनिक स्थाना पर अधिक सम्मान की चाह रखता है। फिर पसा ? पसा ?

अप्रत्याशित उसके अस्तित्व में दयाल की धिनीनी और कठोर मूर्ति

नाच उठी। एन एस नरपिपाच का हृन्महीन विकृत चहुरा नाच उठा त्रिम-  
पर मानवीय सवेदना की हल्की रेखाएँ भी नहीं था। वह कुछ क्षण तक उम  
बठोर कजूस को गालियाँ देता रहा। फिर वह कपड़ पहनकर बहा स चला।

मीनियाँ पर वरदा उमन भी बठी थी। इस बाग़ उसन कोइ हरकत  
नहीं की। वह उम एक् दुदमनीय भावना से देखती रही। जब उमन देखा  
कि अनाम घर स बाहर निकल रहा है तब उसन अपन भाई श्रीम का  
आवाज लगाई कि भीतर आ जाओ।

अनाम ने देखा कि वरदा का छोटा भाई एक लकड़ी को बगल म दबाए  
उसी तरह हिचकोल खाता हुमा चल रहा है। अनाम देखकर खान्दली हसी  
हस पड़ा ताकि उसकी भेंप मिट जाए।

उस वरदा की दुष्टता अच्छी नहीं लगी। यह बिल्कुल अशिष्टता है  
किन्तु वह कर ही क्या सकता है। कुछ दुष्टताएँ ऐसी होती हैं जिनक बारे  
म आदमी चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता। वह तागे म बठा हुमा वरदा  
का विश्लेषण करने लगा। वरदा की आयु अपरिपक्व है और अपरिपक्व  
का प्यार या तो सब कुछ सहकर देखता है और एक जिज्ञासा मरा स्वयं स  
प्रश्न करता रहता है कि ऐसा क्या होता है? अथवा उसम असमता का  
विरोध उत्पन्न हो जाता है जिसके द्वारा उसका हृदय घणा का प्रदर्शन  
करता रहता है किन्तु वह घणा एक उपहास अथवा हल्की दुष्टता बनकर  
रह जाती है जसी वरदा की रह गई है।

वह कासी और माधारण सडकी है?

अचानक सडक पर कोहराम मचा। मानूम हुमा कि एक सज्जन एक  
दुकानदार म दत्ता म कह रह हैं कि व उस पसा दे चुक हैं किन्तु दुकान-  
दार नहा मान रहा है। तब उक्त सज्जन एक उमानी की तरह अपने देग  
म चढ़ रहा धाफलवाड़ी नीतरगाही भ्रष्टाचार और अनाचार का वान  
करन लग। उन्होंने दूध क घाए इसान की तरह वतमान के सभी लोग का

आत्मी बसाव्ही पर

लुटेरा और ठग कहा पर दूकानदार अपन हूठ पर अडा ही रहा और उमन सजन को पसंद देन पडे । इस घटना न अनाम की विचारधारा का भग कर लिया । उसके सामन इन्दु का उत्साह मरा चेहरा नाच उठा । उसके बर-स्पर्श का मकान अर भी अनाम के हृदय म हल्का मधुर संगीत उत्पन्न कर रहा था । आज इन्दु रणछोड बाबू के साथ भवेली क्या चली गई ? फिर उमने अपन मन का दानम दिया कि रणछोड बाबू के वयन का टानने की उमकी हिम्मत नहा हुई होगी । उसने सोचा होगा कि इस अस्वीकृति से नाराज होकर रणछोड बाबू प्रकाशन का काय स्थगित न करे । कुछ म वनिए हात ही ऐस है । चाहे ता वेटा भी दे दें नही ता बटी भी छीन ल ।

दयाल का मकान आ गया था ।

विवाडा के समाप पहुंचत ही अनाम को मडे हुए अन्न की वास आई । उसके नाक के आगे हमान देकर दरवाजा खटखटाया । अनामिका न द्वार खाला । उसे देवत ही उसन विम्मय स पूछा, तुम यहा ? तुम्हारी तो तवि यन खराब है न ?

हा पर दयाल बाबू छुट्टी नही दत ।

ओह ! कितना नीच आदमी है भगवान उसे कडा दंड देगा ।

अनामिका ने मकन स समझाया कि वे धीरे बाल । दयाल बाबू के कान बज तज है ।

क्या कर रह हैं दयाल बाबू ?' उसने पूछा ।

सो रहे हैं ।

उह जगा दो ।

नही ।

डरना हो ?

हा ।

ठीक कहती हा कजदार को अपनी आसामी स डरना ही चाहिए ।

अनामिका ! आज मैं दयाल बाबू को तुम्हारे बारे में कुछ कहूंगा। उनका यह व्यवहार मुझ वतई पसन्द नहीं। तुम निन-ब निन कमजोर होना जा रही हो।

नहीं आपका ऐसा नहीं करना चाहिए। मैं मेरे लिए देवता समान हूँ। इधर मैं इतना ध्याज न दे सकी इतना भागा तक नहीं। मैं इतने दम रपम और उधार दिए कि दवा-गार अच्छी तरह करा। अब आप ही कहिए ऐसे आत्मी की आत्मा न मानू तो क्या करूँ ? दयाल बाबू हृदयहीन और कठोर है। उनका कोई भी अपना पराया नहीं है। मैं बस अपना चाहते हूँ लेकिन मेरे प्रति ब अत्यन्त दयालु और महान्य हैं। मैं नहीं चाहती कि आप कुछ कहकर उनका मन का बन्धन द।

यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं कुछ भी नहीं कहूंगा। अनाम खट खट करता दयाल क कमरे की ओर बढ़ा। खट खट जस ही कमरे के समीप पहुँची वम ही दयाल फट स्वर में चिल्लाया ओह अनाम बाबू कला कार घाइए आइए ।

अनाम ने बैठने हुए कोमल स्वर में कहा आपका जगाकर बड़ा कष्ट दिया।

नहीं अनाम बाबू एक सुंदरार के लिए इससे अधिक प्रसन्नता और क्या हो सकती है कि कोई उससे उधार मागने आए।

अनाम ने सज्ज नवा से दयाल की ओर दवा। उसने अपने मुख पर अवसाद की छायाएँ दीक्षा। उसने दास्यभाव दर्शाते हुए कहा एक गुरु रत ही ऐसी पड़ गई। मैं आपका पिछता नहीं चुका सका जिसके लिए शर्मिन्ता हूँ।

दयाल ने क्रूरता से अनाम की ओर दवा। उसकी गस राज की बनी हुई दाँतों से उसका चेहरा और भी भयानक लगता था। रुखे बान और मले वस्त्र उस और भयानक बना रहे थे। वह बोला, तुम मेरे स्वभाव को

ग्रामी बसायी पर

जानकर भी ऐसी गलती क्या करन आ जाते हो ? पहना रुपया दिया नहीं और फिर लन आ गए ।'

अनाम का स्वाभिमान आहत हो गया । उसकी इच्छा हुई कि वह उठकर चला जाए किन्तु बस के आयोजन के स्मरण मात्र से उसका अंग अंग क्षिप्त हो गया । रणछोड़ बाबू व अग्रज लामा की उपस्थिति में यदि वह श्रेष्ठ चित्रकार की प्रतिष्ठा के अनुरूप बैठ नहीं जाता है तो शत्रु उमस जरूर नाराज हो जाएगी । उसे प्रतिष्ठित व्यक्तिता के समक्ष तुच्छ होना पड़ेगा तथा बक्कूफा की भांति उनके बहकहा का निशाना बनना होगा । क्या उमम उन अपमान को सहन की शक्ति है ? नहीं नहीं ! वह उस ममा न्तक अपमानजनित पीड़ा का नहीं सह सकता । उमका चेहरा तमतमा उठा । वह एसी स्थिति में भी नितांत शांत बठा रहा ताकि दयाल उमने अंत रात के हाहाकार को न समझे ।

मैं बहुत गमिन् हूँ और वायदा करता हूँ कि रणछोड़ बाबू न रुपया लेकर मैं आपका दे दूँगा । उसका स्वर विनती में डूबा हुआ था तथा उसकी आवाज में कठनांतर रही थी नया हिमाव अधिक भी नहीं है ।

मैं वायदा-कायदा कुछ नहीं मानता । सच तो यह है कि मैं तुम्हें रुपये नहीं दे सकूँगा ।'

उमा न कहिए दयाल बाबू, मर घर से पन आया है मेरी मा की तबीयत खराब है घर पर एक पमा नहीं है । जरा माचिए एसी स्थिति में आप मेरा मदद नहीं करेंगे तो मेरा क्या होगा ?

हागा क्या ? मा बीमारी में सड़पती रहेगी और बहिन अमाव में प्यास हृन्त्य लिए हर उस सजीववरी युवती को देखती रहेंगी जो अपने दिल में मुन्तर भविष्य की मधुर कल्पनाएँ और इच्छाएँ लिए मचलती हुई उनका आग से गुजर रही होगी ।

दयाल बाबू ! किसीके घाव पर नमक छिड़कने में आपको क्या

मिनता है ?

यह मैं स्वयं नहीं जानता ।

उसने दुःख से उत्तेजित हाँकर दयाल की आँखें देखा । उसकी दृष्टि में तीव्र घणा थी । उसका शरीर में जड़ता आ गई थी ।

न्याय अपने कंधा की सिकाड़कर वाला तुम्हें मेरे कंधे पर आश्रय हाता हागा । यह स्वाभाविक भी है । अनाम ! जो व्यक्ति जीवन के धर्म से पराप्त करके बचने अपने स्वयं का सम्मानित प्रतिष्ठित करने की भूल में पड़ चुका है । उसका पीड़ा देने में ही मुझे आनन्द आता है । फिर मर जम हृत्पहीन व्यक्ति के लिए किसी की गरीबी और मजदूरी से पिघल जाना भी ठीक नहीं । यदि मैं दुःख की विवशता या रुचि में द्रवित होता हूँ तो मेरा व्यापार चीपटू हो जाएगा । मैं एक स्वर के यन्त्र से सब स्वर चाहता हूँ ।

न्याय बोले ' उसने बड़ी कठिनाई से कहा ' उस एक बार मुझपर और दया कर दीजिए ।

न्याय ने कम स्वर में कहा ' न्याय का व्यापार मेरा मूल्य नहीं है । यदि किसी निरीत बरत या भुगें का दया की दृष्टि में आता है तो उस बचाने का क्या हागा ? न्याय एक अलग भावना है जिसका प्रयोग कहानियों के आत्मवाणी के अर्थ अपने नायक से करना है या बस अपने धर्म के लिए उन भावना का उन पर प्रभाव करना है जिसका ज्ञान उनसे पाय महानिबन्ध के रूप में आता है । मैं अपना अपने हृत्प में भाँटा गया हूँ । मैं भय के अज्ञान में का विश्वास का एक ज्ञान जानी हूँ का बरतन हनु स्वरों से आता हूँ और धाव स्वरों पर आता हूँ और समय पर आना स्वयं उससे स्वयं उसका माना या महान वापस कर आता हूँ । महान मुझसे पास क्या है ? मुझसे है नागा का कामन क्या है ? वास्तव में वह आध्यात्म परमात्मा के लिए महान । एक आत्मा पर बार-बार कम विश्वास किया जा सकता है और उस के

आत्मी दैसाखी पर

कज दिया जा सकता है। न्याय न ग्लानिपूर्वक कथा हिलाकर गहरा मान धारण कर लिया। उमका चहुरा बिल्कुल भावभूय था।

अनाम का मुख दयाल के उत्तर में पीला प्रनीत हान गया। यदि अभी वह अपना चहुरा शीघ्र में देखता तो मिर्ची में तड़पत व्यक्ति जसा लगता।

दयान अब अपने घुटना का बजा रहा था और ऐसे भावा का प्रदर्शन कर रहा था जस उसके मन में उमकी इस करणामयी अस्वीकृति का कोई प्रभाव नहीं है।

अनाम ने बसाली सभाली। उठने का प्रयास किया। उस गया कि उमम जरा भी गति नहीं है। घबरेने के पूर्व उमम दयान को नमस्कार किया। न्याय न इसका उत्तर नापरवाही से दिया।

कमरे के बाहर अनामिका खड़ी थी। उसका जजर चेहरा अनाम के उमम मुख का देखकर शकाभा की ग्लानि से भर आया। वह समझ गई कि दयान वास्तु में अनाम बाबू को जोरा उत्तर दे दिया है।

क्या हुआ ?' प्रश्नसूचक दृष्टि फेंककर अनामिका न पूछा। क्षण भर के लिए अनाम का और फिर अत्यंत धीमे में जसत हुए स्वर में वह बोला यह धन को छाती पर रखकर जायेगा।

आपका न्याय की ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ी ?

घर से चिटली आई है वे बड़ी तभी में है। वह चुन हो गया पर अनामिका का उसका मन बड़ा उद्विग्न गया। अनामिका ने तुरन्त उमे रुकने के लिए कहा और स्वयं दयान के कमरे में गई। दयान अपनी तिजोरी में से नोटा का निकालकर गिन रहा था। पाँचा की आदृष्ट पारकर उमम तुरन्त नोटा को तिजोरी में रखकर उस वन्द कर दिया। अनामिका को देखकर वह विमियानी हसी के साथ बोला तुम !

मैं आपसे एक दिनती करने आई हूँ।



समझ गया तुम क्या कहना चाहती हो। कहोगी कि कुछ रुपया और उधार दे दो। बैरिन मैं फिन्हाल ऐसा नहीं कर सकूंगा। मैं तुम्हें परसा पन्द्रह रुपय देकर पचीस का हैंडनोट तिस्राऊंगा। पचीस क्या? इसलिए कि दस पहले धान और पन्द्रह तेल के। इन रुपया का तुम्हें याज नहीं दना होगा।

अनामिका शांत दृष्टि से दयाल का देखती रही।

दयाल कुछ परेगान-सा बोला मैं नेकहा उस तुमने सुना नहा?’  
दयाल फिर घुटने बजाने लगा।

अनामिका उसके समीप बैठ गई। जाली अनाम बाबू का इस बार रुपया दे दीजिए। मैं आपसे हाथ जोड़ता हूँ।

दयाल ने अनामिका का धर्मिणाय भरी धना दृष्टि से देखा। उस दृष्टि में एक जिनासा थी जो यह समझना चाहती थी कि इस वाक्य के पीछे कौन-सी भावना काम कर रही है।

तुम उनकी मिफारिण क्या कर रहा हो? क्या तुम नहा जानती कि यह मेरा पहलू सही बजदार है।

जानती हूँ।

फिर हम क्या करना क्या की बुद्धिमाना है।

बुद्धि की बात में नहा करती लकिन उन्हें मल्ल जल्द है न्याय याद आप दृष्टि गराय भव है वह न पर उर्मान नहा वह मरन। अनर पाग रुपय अत ही य आपरा मयम पयन चुरता कर दंगे?

मात्र चुरता कर दंगे। य बिमरार और उयक है। य क्या का उयान उदार और उम अय नया मात्र नन म नग हण है। दंगनी नहीं य ममा दंग-बर्डा फिनामफा और नतिरता का वानें करन है।—धम एक दंगमना है और भगवान एक बसवाम। ममात्र में नानि अनी चाहिण और नारिया का स्वयता मिमनी चाहिए लकिन य मय वानें उम समय हवा हा जानी

श्रीमती बमाली पर

हैं जब पान में रसिया नहीं हाता है। दखा नहीं अनाम का चेहरा, सगता है वपों स धचारा बीमार है, वामार।'

कुछ भी हो, आपका।' अनामिका न भरपूर स्नेह भरी दृष्टि से दयाल को दखा। दयाल काप-मा गया। तनिक उसने उससे स्वर में बाता, नहा नहीं मैं रस नहीं दूंगा फिर अम भग व्यक्ति मे वास्ता जहा तक हा सक कम हा राखना चाहिए।'

अनामिका ने दयाल को हाथ जोड़ दिए। विगलित स्वर में उसने कहा, इस बार आपका मेरा कहना मानना ही पड़ेगा। यदि अनाम बाबू ने यह रकम नहीं दाता मैं द दगी।

तुम्ह अनाम से इतनी हमदर्दी क्या है ?

अनामिका गम्भीर स्वर में बोली किमी परिवार में पसान होन मे उस परिवार को कितनी भयंकर घटनाएँ घठानी पडती है इसका अनुभव मुझे है। एसा समय है कि अभाव मनुष्य को पतन में टाक द।

नैकिन ।'

अनामिका ने दयाल के पाव पकड लिए। दयाल अपन पावा का छुना-कर वाला मुझे छुओ मत, छुओ मत। अनाम का भीतर भेज दा।

कुछ क्षण पश्चात् अनाम पुन ल्याल के कमरे में आया। हैंटनाट लिख-कर उसने ढाई सौ रुपये अनाम को दे दिए और अनाम अनामिका को धन्य-बाद कर चन पया।

रास्त में जात हुए वह साच रहा था यह कठोर प्राणी अनामिका की बात क्या माता ह ? क्या वह अनामिका से प्यार करता है ? क्या इतने स्वार्थी और लालुप दुमान के मन में मानवीय संवेदनाया की लहर दौडती हैं ? क्या वह किसी से प्यार कर सकता है ?

अगले दिन मध्याह्नक इंदु के यहाँ पार्टी थी। आगन में कुछ मेज़ों का आयोजन भी मिलाकार एक बड़ी मज़बूत गैर जिसपर सफ़ेद चादर बिछा दी गई। मेहमानों के लिए रसगुल्ले बरफी और मसालेदार चाय का प्रबंध भी किया गया।

ठीक समय मेहमानों का आगमन शुरू हो गया। इंदु एक मिस्ट्रेस थी, तैलिया थी और थी मित्रता के युक्त। उसने मित्रों की सच्ची विवेकपूर्ण मुकतियों की अधिष्ठा थी। अनाम के कहने पर इंदु चाहते हुए भी स्थानीय लोगों का व्यवहार निमित्त नहीं किया। अनाम का असाध्य विश्वास था कि ये हमारे स्टैंड के नहीं हैं और वे वरन् हमें उल्टा-पल्टा ही बना सकते हैं। हाँ उस पार्टी में कुछ बुद्धिमान लोग जा गठिया माहिपराएँ एक मिनिस्टर द्वारा संबोधित पत्रों के सम्पादन के आदेशों के तहत हुए थे।

रणछाड़ बाबू की जान निराश थी। वे परममूर्ख धानी और बड़िया मिलने का युक्त पन्न हुए थे और उपस्थिति में धुन धनकर बातचीत कर रहे थे। उनका ज़बान में जगता था कि हर महिला और हर पुरुष उनसे मिलने के लिए आता है। अनाम का भ्रम था कि वह मर्दाना हूँ। रणछाड़ का मानना था कि नाना का मानना था कि रणछाड़ बाबू की रितना धन धुन कर जाने कर रही है और अनाम गर्जना में उनका रिश्ता नष्ट होकर मित्रता रही है। यही सब उसका ध्यान बरकरार रख रहा था।

मगर अनाम के अस्मित में कुछ का पन्ना साकार हो उठी। अनाम ने अपने उधार लेकर बंधी थी। इंदु के पास गया। इंदु अनाम के घर में बगीचे के बाग़ की पार्टी के आयोजन का हिमायत मना रहा था। अनाम का मन ही बहाना मैं बड़ा गरीब हूँ कि पन्ना मुझसे जग मिल पाए रणछाड़

आत्मा बमाखी पर

बाबू स्वयं आ गए ५ इसलिए उनका साथ जाना पड़ा ।

कई बात नही ।

बठा ता सहा । इंदु ने कुर्सी की आर सवंत किया ।

म बठन नही आया, तुम्हें अपने संग ल जाने आया हू ।

क्या ?

पहन यह बताआ रणछोड बाबू न तुम्हें क्या ताहफा दिया ?

उहान ? इंदु कहती-कहती स्व गई नही बताऊगी, ताहफे की ग्रह  
मियत मारी जाएगी ।

फिर मैं भी तुम्हें बाप म बताऊंगा हालांकि भर पाम कार नही  
! इसलिए मर साथ तुम्हें तागे ही म चरना पड़ेगा ।

पर कहा ?

चौक रास्त तन ?

यदि नाम का चनें तो तुम्हें फार् एतराज हाया ?

मिलकुन ! उसकी आदृति एकदम बदल गई और वह तुरन् दरवाजे  
का आर धूम गया ।

इंदु अनाम की नाराजगी भाप गई । उसने तुरन्त जाकर उस राका  
और चलन का आश्वासन लिया । अनाम कुछ नही बाला वह इंदु का  
जननी निगाहा स देखता रहा । इंदु न तुरन्त अपने बदले और व अनाम  
का साथ चल पड़ी ।

गतव्य स्थान पर पहुंचकर अनाम ने इंदु स कहा तुम अपने मनपसंद  
का ताहफा खरीद सकती हो । मैं रणछाण बाबू की भाति तुम्हें सान का ताज-  
महन नही दे सकता फिर भी तुम्हारी इच्छा का पूण करने की भरसक  
चेष्टा करूंगा । दोनों क्या चाहती हो ?

अप्रत्यागित इंदु गमीर हो गई । सडक का नया घुमाव आ गया था ।  
वह एक और अनाम का लेकर बोली तुम बार-बार रणछाड बाबू का नाम

क्या लिया करत हो ? उनक प्रति तुम्हारी जलन अच्छी नहीं है । उन्होंने हमारा मला ही किया है ।

मैंन बत्र कहा कि उन्होंने हमारा बुरा किया है ? लेकिन किसा कलाकार को इन पूजीपतिया का पिछलग्ग बनना भी तो शायी नहीं दता । जम्हरेत स अधिर महत्व भी ठीक नहीं ।

ऐसी तो काँ बात नहीं है ।

फिर अबली उनके साथ क्या गई थी ? जानती हो तुम्हारा उनक साथ इस तरह घूमना किस वातावरण को जन्म द सकता है ?

आह ! अब समझी तुम यह कहना चाहत हो कि उनक साथ घूमन पर लोग तरह-तरह की बात करग पर इन वागान ता हमारी और तुम्हारी मित्रता पर भी कम कीचड नहीं उछाला है ? अनाम 'हम दुनिया स नहीं डरना चाहिए हम उस तरह दकियानस हाकर सोचना भी नहीं चाहिए । हम दाना अन्दे दोस्त हैं हम जीवन के नय मानदंडक साथ चलना चाहिए ।'

तभी एक एग्ला इडियन जोडा जार से बटस करत हुषा उनके पाम से गुजरा ।

इदु मावधान हानी हुई बानी आह ! हम भावावेग म ह्यान की अनुकूलता का भी मूत बठ ।

बाग का प्रसंग अन्त गया । अनाम न तुरन्त पूछा तुम्हें कौन-सी वस्तु पसन् है ।

जा तुम्हारी पसन् वही मरी पसन् ।

फिर चला । उन दाना न छागी चौपड की आर प्रस्थान किया । तब व एक घडीवान की दूशन पर पण्ड आर अनाम न एन सी पट्टह स्पय म इटु क त्रिण एक घने खरीन्ग ।

एक बाग व बाग क एक छार पर बठकर प्रम का वातावाप करन लगे । अनाम न जानाकि इटु वस्तुन उम ही प्यार करत है । इस दिन उमने

एक नारी क श्वासा की उष्णता धीरे धड़कनें अत्यन्त ही करीब से महसूस की। वह उगड़ा इमान जिसे युवनिया या ता स्वाथवा ही प्रेम किया करती था मयवा त्या म द्रविन हाकर उमरर क रणा की जगह प्रेम के भाव प्रपट किया करती थी वह एक जवान युवती के स्वाभाविक प्रेम का स्पष्ट पानर धय नय हो गया। उम रागा यह पावन प्रेम एक चिरन्तन आलोक धनकर नमनि म बिगरे जाए और उमके जीवन म आनन्द का वषण कर दे और एक एम माडे दद की अमिट अनुमूते की रचना कर दे जा उसरी नस-नस म समा जाए।

व क्षण ! जीवन क परम मुग्य और विनम्र भावनाया से भर क्षण ! आत्मा की प्रगात कामनताया का लिए क्षण ! व क्षण अक्षुण्ण हां अमर हा।

अनाम क स्मृति-पटल पर उन क्षणा की चिरन्तनता क लिए सहसा स्वर गूज पड़े। वह टेनल पर दम तरह निस्पद पड़ा था जस उसम प्राण ही न हो। मधुर कानना म वह भूत गया था कि वह कहा बठा है।

अनस्मान रणछोड बाबू ने उमके विचारा के सागर म ककड पका।

किस विचार म था गए अनाम जी ?

प्राह ! किमी म नही। अनाम न मुस्करान की चेष्टा की।

मेरा विचार है कि पार्टी की कायवाही शुरू की जाय। कक का मिस्त्रम हाताकि विदनी है। र है मजेदार अत इसरा ही आयाजन रख लिया गया है। अब मैं अपना तोहफा भेंट करूया अनाम बाबू ?

रणछाड बाबू न हिन्दी का टाइपराइटर उठाकर इंदु का लिया। इंदु ने मुस्कराकर उनका अभिवादन किया। रणछाड बाबू ने भीड़ को सम्बोधित करके कहा अभी इनके लिए सबसे महत्व की चीज यही है और मैं आशा करूंगा कि आप विश्व की एक महान लेखिका बन। तब उहान गव से अनाम की ओर देखा। उस दृष्टि मे एक पूजीपति का अहम् नाच रहा था।

अपनी बंदी के लिए लड़ना पति नहीं चाहिए ? यदि इंदु की मां राजी भी हो गई तो वह अपनी बंदी के सग रहगी । उसके जीवन का आधार इंदु ही है । इंदु ! अंधेरे में इंदु का चेहरा अगारा-सा दीप्त हो उठा । इंदु उसे कभी भी इकार नहीं करेगी । उन दोनों का एक पथ है उस पथ के लिए प्रत्येक एक दूसरे के लिए सच्चा साथी बन सकेगा । लेकिन उसकी चार बहिन ! मूखे मूखे मुख और धमी धमी आस । जजर खडहर की भाति जिनके शरीर हो गए हैं । उसकी वे बहिन बन्नाला की भाति उसके अपना लोक में खड़ी हो गई । वे मुस्कराने का प्रयत्न कर रही हैं लेकिन उनकी मुस्कानें उनके पीछे अधरा में बहुत दूर जा चुकी हैं । उनमें यन्म इतने दुबल हो गए हैं कि वे हिरणिया की भाति सरपट दौड़ नहीं सकती । वे हथि निया की मतवाली चाल से औरा का मन भी नहीं मोह सकती । धुटा धुटा सा जीवन ! नीरस और निरपद !

प्रीत की वे अनुमति भी नहीं कर सकती । इस उम्र में जब हर युवती पति या प्रेमी की मनाकामना रखती है तब उसकी बहिन अमावा में चिड़ चिड़ी और अन्मख हो रही है अथवा उनका मला शरीर चाय की प्याली और स्वादिष्ट भोजन पर विश्वास की सीमा का उल्लंघन करके अपने प्राण का छलांगता । उनका जीवन बरबाद हो जाएगा । वे बर्बर होकर मुन् छुपाती फिरेगी और आमरा न पाकर आत्महत्याएं कर नगी ।

यह सम्भव है । उमन मन ही मन बार बार क्या उमन एमी अमावस्य गरीब मुनितिया की कई कहानियां पढ़ी हैं । तब क्या उन कहानियां की नायिकाओं की पुनरावृत्ति उसका अपने घर में होगी ? नहीं । वह ऐसा नहीं हाने दंगा पर ऐसा होगा ही ! मध्य जिना कारण न हो सकता । वह साब रहा था कि उमरा अहम् और उमर विचार एक नई प्रेरणा और प्राप्ति के प्रतीक हैं । क्या मला एक व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य और नश्य की छाड़कर परिवार के धनोन्नत बानावरण में अपने प्राणों को मर

करे ? उमने पला पर नत्कर गम्भीरता से विचारना गुरू निया, मैं एग  
चिक्कार हू-नक्क हू । कत्ता मे नई स्वापनामा और पुरानी परम्परामा को  
सम करन वाला । मरी बहिनें क्या नही नौकरी करती ? क्या नही  
कमाती ? उह भी मगवान न दो हाथ-याव दिए हैं साउडी दी है घागें  
दी है फिर क्या व अरन भाई पर आगिन रहनी हैं जगिन उनका भाई  
स्वय लगडा है ?' भा का कहना है कि सडकिया का कमाना उसने कुटुम्ब  
की मर्यादा क प्रतिकूल है । मैं कौटम्बिक औरव का सडकिया को नौकरी  
करवाक नही खाना चाहती । अनाम की आत्मा के आगे रात के अधेर के  
अनिरिक्त एक तिमिर आवरण और छा गया । उमन अपने आपको धिक्कारा  
तब उमक आग एक छोटा-सा पृष्ठ स्वय गुल पडा । उमकी मा का खत  
प्राया था । अमाव का रोना रोन रोन उमने निखा था, 'तुम बडे गहर म क्या  
चन गए इसको मैं अब ममभी हू । यहा कम स-कम तुम मरी राटिया का  
प्रबध तो कर दत थ लेकिन बहा तुम इसस भी छुट्टी पा गए । आत्मा के आगे  
नत्पत नग इन्सान का देखकर सबका सज्जा आ जाती है । वह उनके लिए  
कुछ करता है । तुमने लिखा कि अभी मेरे पास एक पसा भी नही है ।  
साल म आपको दो सौ भेज चुका हू । लेकिन तुम्हार मित्र कहते ह कि  
तुम एक महीने का तीन सौ भव करत हो । तुमने निखा कि मैं अविन  
नग कर सकता मेरा भी जीवन के प्रति एर ध्यय और एर नक्ष ह कि मैं  
बहुत बडा चित्रकार बनू नया हर कलाकार को कुठ बनने के लिए त्याग  
करना पन्ता है । गह त्याग गद मुके जवा नही मर बने, वस्तुन याग  
एक बहुत बडी चीज है जो दूसर के मुम्बो म सम्बित होनी है । सरा मोचो  
यदि तुम्हाग वाप वनकीं म अपना जीवन खोकर तुम्ह इतना नही पन्ताता  
तो तुम कहा पर साधारण नौकर नही होन ? और तुम्हारे महान बनन क  
माने माने ही न बने रहत । दम बात को पत्कर अनाम को गुस्सा आया ।  
यह बहुत मत्य अनह्य-सा उसके मन म ध्वनिन प्रतिध्वनित होना रहा । लेकिन



अनाम दा तीन दिन तक गम्भीर और चिन्तित रहा। वात में वह महत्वा-  
का ती इसान आकाश का स्पर्श करने के प्रयास में धुन सलग्न हो गया।

घोर आज एक मिश्वारी की भांति वह दयालु स रम्य उधार लेकर  
आया। वहिना और परिवार की मूख की दुहाइ दी। ऐसा भुगत अभिनय  
किया जस उसका जीवन का सर्वोपरि सुख उमन अपने परिवार का सुख  
ह। लेकिन वह प्यास प्राणी की भांति उन स्पर्श को प्यार की वार्तिदा पर  
लुटा आया। यदि वह नहीं लुटाता तो बहुत बुरा महसूस करती और उस  
समाप्त हृदय दृष्टि से देखते विशेषकर रणछोड बाबू।

उसने ईप्सयानु व्यक्ति की तरह रणछोड बाबू पर धूका। उसे प्रतीत  
हुआ कि रणछोड बाबू उसके प्रतिद्वंद्वी रूप में था सडे हुए ह।

यथायक वह विद्रूप की हसी हसा। समीप कोई हाता तो वह अनाम  
का इस हरजत को पागल की हरजत के सिवाय कोई मना नहा दता।

उस हसी में 'सका अहम भरक' रहा था जस वह शून्य रहा था कि  
रणछोड बाबू इतना आपना नहीं हा मक्ता नहीं हा मक्ता। वह एक  
तोलिका में जिसमें हृदय में भाववायना अधिर है। जो एक कठोरता पर हा  
माहित हा सकती है जो उपहार का धन का प्रत्युपकार में ही म मरती है।

किर उस लगा कि वह शून्य बन गया ह। उन जगहाइ नी और सबर  
ही रणछोड बाबू से मिलने का साचकर मान का प्रयास किया। उस यह भा  
मात्रुम नहा हुआ कि उस सब गहरी नीम आ।

अनामिका ने उस ठीक घाठ बज उजिया। माग मरने हुए उमन अना  
मिका में कहा मुझ मान ने रणछोड बाबू के याना जाना था तुमने मुझ  
क्या नही उठाया?

आप गहरी ना में माग हुए थे।

गहरी ना।

उमन चाय शून्य हा कहा तभी गहरी ना जिसमें वह विचित्र मरने

अनाम बसावा पर

घात है। आप नाम म कभी हम रह थे और कभी रा रहे थे। य सपन भी  
जिने विविध हात ह ?

अनाम ने अनामिका की बाना पर जरा भी ध्यान नहीं लिया। वह  
तुरन्त नयार हावर रणछाड़ बाबू के घर की ओर चला पड़ा।

दस

जब अनाम ने रणछाड़ बाबू के शाहमरूम में प्रवेश किया तो वहाँ गहरा  
सन्नाटा था। उस सन्नाट में अत्याचारी के नालदार जूता की तरह अनाम  
का बसावा की खर लट गूँग रही थी। वरदा ने आज भीड़िया पर लिया  
था लगे से जा प्यार करेगा वह बहुत दुःख पाएगा। उसे पड़कर अनाम  
का मुँह खराब हो गया था। वह पगली लड़की उसे क्या तग करती है यह  
उमरी समझ में नहीं आया। यह रास्त मर इसी कारण उलझन में पड़ा  
रहा।

यहाँ गहरा सन्नाटा था। रणछाड़ बाबू तथा इन्दु का गमीर मुद्रा में  
दया तो उस अस्मिता के श्रुति और श्रुति की व्यापकता से जा एवात  
पार मुन श्रुतिवाजिया परत में और किसी श्रुति का अनाम अस्मिता  
म्यान वन गान है जग में कभी उड़ हो ही नहीं मवत।

अनाम ने अनामिका की दृष्टि उन लीला पर डाली और फिर अनामिका  
स्वर ॥ यह गाना आप दाता बने गमीर ह ।

इन्दु ने बेवक मुस्मसन की उल्लास और रणछाड़ बाबू ने कहा हम  
मात्र रह थे कि आपका टांग टांग हो गवना कि नहा ? क्या आपने कभी  
हिमा टावर ग गवना सी थी ?

नहीं।

क्या ?

मैं जानता हूँ इसका रिश्ता हुआ था क्या की जहरत है ?

‘मनुष्य था तो क्या का प्रबंध कर करता है ।

‘आप यह धार्मिकता का बानें करत हैं जिनका पास अनार-मनाप क्या होता है पर मैं एक निश्चय करत हूँ ।

इन्दु ने माया का समायन करत हुए कहा क्या की बाना की छाड़िए, बलिष्ठा अपनी माया पर छाड़िए ।

रणछोड़ बावू न सुनत कहा इन्दुजी का कहानी-मग्न ‘दोपत्ती का प्रण विनाप तयार है । आपका एलबम बन प्रसन्न बल जाया । इन्दुजी का कहना है कि मैं आपका पाच सौ रुपया एडवाम दे दूँ ।

‘बचत पाच सौ ।’

‘उत्तम अधिन मैं नहीं द सनता । हिला म ईमानदारी स इतना भी बोर्द नहीं देता है । मुझे अच्छी तरह मानूस है कि आपका यह एलबम कोई ना छानने को तयार नहीं हुआ था ।

‘फिर आप क्या छाप रहे हैं ?’ उसने नाराजगी के साथ कहा । वह इस अपमान को नहीं सह सता ।

‘इन्दु न उस गीत करत हुए कहा अनारम । बात-बात में उत्तजित होना अच्छा नहीं । यह व्यापार है इसमें धन और समझदारी की जरूरत है ।’

अनारम को यह उपदेश सुन्या के चुनने जमा लगा । उसने इन्दु की ओर घूरा । इन्दु की आवाज में सिपायन थी । ऐसी गिरायत जिसमें उमका प्यार भी होता है ।

मैं इसे छापूंगा । मेरे सामने सौटाने का प्रश्न ही नहीं है । मुझे आपकी ओर इन्दु की ही पुस्तकें छापनी है । मैं आपकी नई बला को समझाना चाहता हूँ । बाद में आपका कहानी संग्रह भी छापूंगा ।

फिर इन्दु जा ता कह देंगी वह मुझ मरूर हाथा ।

हर्द न बात । रणछोड़ बावू मुस्कराए ।

ग्रामी बसाखी पर

इसी बीच एक मोटी स्त्री ने जिमकी कमर ढोल की तरह गोल मटोल थी द्राइंग रूम में प्रवेश भी किया और वापस चली गई।

इंदु की आँखें फट गईं। लेकिन रणछोड़ बाबू ने बह्याई की हमी के साथ कहा, आप इन्हें नहीं जानती ये मेरी धम-पत्नी हैं। मैं अभी आया।'

उनके जान ही अनाम ने घणा से मुँह बिचकाकर कहा ये इनकी धम पत्नी हैं या नम।

इंदु ने चुप रहने का संकेत किया।

रणछोड़ बाबू तुरंत आ गए और बोले, एक जरूरी काम आ गया था। हा फिर् मैं आपको पाच सौ रुपये दूंगा पर अभी नहीं एक माह बाद। क्या अनाम जी, आपको बिना रुपया के कपट तो नहीं होगा?

अनाम कुछ कहता, इससे पहले ही इंदु बान पड़ी नहीं रणछोड़ बाबू अनाम आ का रुपये-पसा की क्या कमी है? इतने प्रमिद्ध चित्रकार और सेल्व हैं कि जहां भी जाएंगे रुपया बटोर लाएंगे।

अनाम अब क्या कहता? भवित स्वर में बोला आप अपनी मर्जी से दे दीजिएगा। चिंता की कोई बात नहीं।'

फिर यह तय रहा कि मैं आपका यह एलबम कल प्रेस में दे दू। छपाई और सजावट का सारा काम आपके जिम्मे रहा।

कोई बात नहीं।

इसके बाद चाय पीकर बंदागा—इंदु और अनाम—वहां से चल पड़े। गनी के पार पहुंचते ही अनाम ने इंदु से शिकायत भरे स्वर में कहा तुम्हें उस सठ के बच्चे की हानि नहीं मित्रानी चाहिए तुम्हें उस डाटना चाहिए था वह कसा के बारे में क्या जानता है?

रणछोड़ बाबू निरे बुद्धि नहीं हैं। इंदु ने अपनी असहमति प्रकट करत हुए कहा उन्हें साहित्य और कला का अच्छा ज्ञान है। वे भी तुम्हारी तरह विदेशी साहित्य का अध्ययन करते हैं।



आत्मी वसावो पर

अनाम बचा है यह सावसर ऊपर की ओर चला। अमी वह न  
माया नहीं चला पाया था कि बरला तिलबिलाकर हस पड़ी। उसकी हमी  
म तात्र व्यग्य था। अनाम उसे नहीं मह मका। उमने पनटकर देवा।  
बगाला का सनुनन विपड गया। वह गिरता गिरता बचा। उमरी कुहनी  
पर लरीच आ गई।

तमी बरला रक रककर वाली अविश चाट ता नहीं थाइ अनाम बाबू,  
मेहरा दू ?

और वह हसती हुई उमरी आवा स आभन हो गई।

मातर पटुचत-पटुचने अनाम का हृदय मर घाया और उसके मन म  
आया कि वह दूर निजना म बस जाए जहा उस पर दया करने वाला और  
न्यय करने वाला कोई भी न हा।

## ग्यारह

अनाम चार दिन तन तिसा मे नहीं मिला। अनामिका उस उसरी  
उत्साह के बारे म बार बार पूछती थी किन अनाम मन ठीक नहीं कहकर  
वामाग हा। जाता था। उदासा और एकान्त के जीवन म उमना माया  
कवि फिर स जाग उठा। उसने लेनीन कविताए लिखी जिनके गीपक बड़े  
विचित्र थ। बाघड म कमल और मैं रात का हृदय चाद का तीर,  
तारा मरा आचन टूटा चाद। उन कविताया म उसके मन की हीन  
भावनाए प्रयोगवादी नय प्रतीका और उपमाया के साथ प्रकट हुई थी।  
उन सभी के बीच इंदु की स्मृति उमने मन पर छानी रही। चार दिन बीत  
गए। इंदु उसक यहा नहीं थाइ। उमरी याज्ञ-वसर नहीं ला। उनका  
अन्तर डाह म मर उठा उसे धन रणछांड बाबू मिन गए ह न ? वह उनक  
साथ माटर म सर करने जाएगी। वह इस तरीक लेखक को क्या समझेगा ?

उमरी ३ रु का एक निधिय भिन्न बाता रि यो रिमने पटना ३ पर गिरा-  
गिरा मगर २५ ।

गवरा १) गया था । घागमाय गाय था अमिता धुन बहा तत्र हारर  
भगत गयी थी ।

अनामिका न गता तयार कर लिया था । यह गता पगल कर लाई ।  
अनाम न पगला कीर लिया रि माइया पर रिमी क छात्र का छात्र मिता ।  
अनामिका न गता दयाल बापू ध ।

दयाल धीरे धीरे उबर चला । उमरी दूरा हुई अमल मला बाना  
बात और मंली पर आ पुनः क नखीर तनिर पर भी गई थी यह अनु-  
मान मा बरा ११० दली था रि यह व्यक्ति लगपति है ।

दयाल क नाम का गुनत १) अनाम पयरा गया । फिर मा उत्तन उस  
मयराट्ट का महेगी छात्रमीयता म परिवर्तित करत हुए दयाल का सम्मानित  
बाद म दयालन लिया । दयाल उमक मनामावा की ममभता हुआ वाला  
कुछ व्यक्ति का अफनी और अपन परिवार वाला की बनि देने म हा  
अनाम छाता है ।

अनामिका का दयाल की बात रहस्य मरी नगी । वह जिज्ञासा मरी  
दृष्टि म दयाल की और दखने लगी । अनाम का कीर हाथ का हाथ मे रह  
गया । उत्तन धून जम सा गया ।

तुम पीले पड़ गए ? क्या अनाम बापू ! कदाचित्त तुम इस अपमान  
का सह नहीं सकते । तुम्हारा यहू बौखला भी सखता है । लेकिन मैं एक  
सूदखार हूँ । दया और प्रेम से रहित । हृदयहीन और बठोर । चतुर और  
हवा के रस को पहचानने वाला । ऐसे चतुर व्यक्ति को भी कोई कुशल  
अभिनेय द्वारा टक्कर ल जाए तो उसे कितना दुःख होगा । कितना गुस्सा  
आएगा ।

घातमी बसाखी पर

अनाम के मन में पीड़ाओं के बान्ह छा गए। हर क्षण उस लगा कि बान्ह फटकर बरस पड़ेगा और उसके अन्तराल को पीड़ाओं के सपों से भर देगा। उसने धवराहट में अनामिका की आर देखा। अनामिका पूर्ववत् निस्पृह-सा खड़ी थी। दयाल की आखों में क्रूरता थी। फिर भी अनाम ने अस्फुट गान में बड़बड़ान की कागिश की। दयाल बावू आप थोड़ी दूर शान रहिए मैं खाना खा लेता हूँ।

तुम्हें भूख लगती है ?

क्षण भर के लिए गहरी निस्त-घटा छा गई।

मुझे विश्वास नहीं आता कि तुम्हें भूख लगती है या तुम भूख के अस्तित्व का स्वीकार करते हो। तुम्हारे लिए सेकम देना है प्रेरणा है जीवन है। लेकिन तुम उसका कलाक माध्यम या उसके नाम से आनन्द लेना चाहते हो।

अनामिका ने बीच में अवरोध उत्पन्न करना चाहा। दयाल ने उस रोक लिया।

तुम चुप रहा अना यह भोजन के समय जरा भी प्रतिकूल परिस्थिति नहीं चाहता। अभीम शांति चाहता है। लेकिन वससे पूछा कि जाके घर में रागी नहीं है हजार परेगानिया है वे राटा कस खाते हैं ? यह कना-कार जरूर है लेकिन इसमें इन्मानियत नहीं। यह मुझे और तुम्हें धाखा देकर छप्य ले गया। मैं अपने आपको इंसान नहीं मानता मैं सूत्रधार हूँ पर यह इन्मानियत के पुतल इंसानियत को खूब पनपाते हैं ? शायद मैं पतान भी इसमें अच्छा हूँ।

दयाल बावू ! अनाम जीव पड़ा।

जीवन क्या हो ? अना यह भुमम रुपया भा-वहित की भूख के नाम पर म गया और खरीद लाया अपनी प्रेमिका के लिए घड़ी।

अनामिका स्तब्ध-भी रह गई।



तुमने मुझे विवश रिया नमन अनाम की वहिना की दुःख दी। पता नहीं मेरे जमा पथर निज जमान तुम्हारा कहना क्या मान बठा? अतो इस चित्रकार ने मुझे घासा दरर नूट लिया।

मैंने आपका गुण नहा हटना निस्तकर रफया लिया है। अनाम ने आपसे स्वर म कहा।

तुम्हारा हैंडना का पाच रफया भी बार्ड नहा दगा। तुम्हारे पास है भी क्या? तुम कलाकार हा भूत और गरीब।

देविए दयाल बाबू आपकी सम्मता के बाहर नहीं होना चाहिए मैं आपकी पार्श्व-बार्ड दे दूंगा। आप दो चार दिन और धम रखिए।

दयाल ने इधर उधर दगा और फिर नहा स्त्री के रूप और पौवन की दाप्ति में चलाचौध हाने वान मादमी फिर नहा समलत। तुम्हें घर की जगह उस अध्यापिका की चिंता है। फिर मना नम मरा कल क्या चुका आए? तुम्हें हट्टु चाहिए उसका राजी करने के लिए तुम अपना तून भी गिरवी रख सकते हो। छि।

अनाम को गुस्सा आ गया दयाल बाबू हद से बाहर न जाइए मैंने यह दिया कि मैं कल ही आपके रूप चुका दूंगा।

तब तो मुझे बड़ी प्रमनता हापी। लखि एव बात इस वकील की भी माना भर भुवकिन आज की बार्ड भी चतुर बाबू और गितित सुबती तुमसे प्यार नहा कर सक्ती एक लगन का जान रूझकर अपना पति बौन बनाएगी? यहां कला और कलाकार पर मिटने वाले निज नहा है।

अनाम को बहुत गुस्सा आया। उसने चाहा कि वह बसाती से दयाल का सिर फोड़ दे। इस विचार से वह बाप भी उठा। उसने जात हुए कहा, अब आप यहां मत आइएगा मैं अपने आप अपना रफया पहुंचा दूंगा।

दयाल ने घमखर कहा, मैं काल हू मैं अपना रफया बमून करना भी जानता हू।

आत्मी बसाखा पर

दयान बना गया। अनाम खाने की थाली को फेंकते हुए पागलों की तरह चिन्ताया जगली नीच, कमीना, बदतमीज खाने को जहर बना गया।'

अनामिका उस चित्रलिखित-सी देखती रही।

यह आत्मा नहीं गतान है। उसकी सारी दौलत का चुराकर लुटा देना चाहिए। वह फिर चिन्ताया।

अनामिका में बाद उत्तर नहीं लिया। वह बिम्बरे हुए खान को एकत्रित करने लगी। वह दस्तनी गान और दुखी थी जिस वह अब रो पड़ने का आतुर है।

जब अनाम बहुत दूर तक बड़बड़ाता रहा और अनामिका ने कोई प्रोत्साहन नहीं लिया तब अनाम उस पर झुका पड़ा 'तुम थोलेली क्या बना क्या तुम गूगी हा?'

गूगी बनने में हा नाम है अनाम बाबू।

ओह! तुम भा अब सूझिया में बालगी। साफ क्या नहीं कहना? 'उमने अपना सिर पकड़ लिया।

अनामिका ने थाला हाथ में लेकर कहा मैं इतनी देर से यही साच रही थी कि आपन झूठ क्या बाना? क्या आप कुछ और बहाना नहीं बना सकते थे? क्या आप मुझे सच्ची बात नहीं कह सकते थे?'

मैंने कोई बहाना नहीं बनाया मैंने जा कहा सच कहा। मर घर पर भी एक पसा भी नहीं है। बहा में बिटली भी आई थी।

'फिर आपन अपने परिवार के प्रति यह अपाय क्या किया?'

तुम नहीं जानती कि प्यार में आदमी का मजबूरन क्या-क्या करना पड़ता है? यहा प्यार की हाड लगती है। उस हाड में मुझे भी कुछ दाव पर लगाना होता है। तुम्हें कम पना सगे कि प्यार में आत्मी कितना लाचार और विवश होता है। मैं इन्डु का प्यार करता हूँ उस पार्टी में मैं कुछ न

देकर उसका और अपना अपमान बस करवा सकता था। आखिर मैं अपने आपको उसका निवृत्त मित्र मानता हूँ। चित्रकार हूँ। तुम नहीं जानता कि यह सब क्या होता है।

वह उत्तजित हो गया था। उसकी आँखें नम हो गई थीं। अनामिका ने ठड़ी आह लेकर कहा मैं कलकिनी माँ का भूया और नगा नहीं देख सकती चाह मुझे आजीवन कुचारी रहना पड़े। चाह मुझे जीवन भर प्यार की प्यास में तड़पना पड़े।

## बारह

थाड़ी ही देर में अनामिका जहरत से अधिक गान और गमीर हो गया। उस कुछ सोचना और न साधना दाना अजब में लग। उसका दयाल के सौद जान के बाद मन-ही मन एक घुटन और अपमान महसूस हो रहा था। धीरे धीरे उसे लगा कि उसने सिर में दद हो रहा है। वह पलंग पर लेट गया पर अधिक देर तक नहीं सो सका। दयाल ने उसे लगडा कहा इस बात ने उसपर गहरा असर किया और वह विचलित-सा इधर उधर फरवटें मता रहा।

अनामिका चली गई थी।

उस एकान्त में वह खिडकी की राह कुहनिया का सम्बल लेकर लडा हो गया। दो सुखी जोड़े हस्त हुए गुजर रहे थे। उसने क्षण भर के लिए कल्पना की कि वह इसी तरह से इंदु के साथ जा रहा है। इंदु मुन्का मुस्काकर उससे बातें कर रही है।

पर लमड़े के साथ कौन शाली करेगा? दयान के यहाँ उमके मन में डर पदा कर रहे थे। अनामिका ने अपने का समझाया कि यह बरबाम है। इन्दु उसे मच्च हृदय से चाहती है। वह स्वयं इन्दु का हृदय में चाहता

आमा बसाखी पर

है। लेकिन वह चार दिन में आई क्या नहीं? उसने अपने कपड़ा की ओर देखा जम वह जाने का विचार कर रहा है।

उमने कपड़े बजा। बसाखी ली। घर से बाहर चल पड़ा। बाड़ी की बाइ और एक छाती बंद गनी पड़ती थी। उस बंद गली के सिरे पर बरदा एक कान युवर से हम हसकर बाने सर रही थी। वह बाला लडका देखने में प्रिय लगता था। उसके बाला की हड्डिया उमरी हुई थी। उसने एक मागी घाती और कुता पहन रखा था। उमके बाल घुघगले और घने थे जस लिंगिया के हात हैं।

घर पर जम ही अनाम की दृष्टि पड़ी वसे ही वह जरा ऊंचे स्वर में बाना देखो गरर, आज मध्या बला तुम मुझे अवश्य बाग में मिलना, उसी जगह जहा हम बन मिले थे। फिर उसने नाक में सिबोडा। उसकी हर हरकत में एक उछलता थी।

अनाम ने आगे बसा हुआ सोबा यह करती रह अपनी बला में। वह तबो में काम बतान लगा।

कोई रिक्का उसे नहीं दीया। वह पुन्पाय के छोर पर खड़ा रहा। वहा खडखड उमने मोबा कि दयाल बाबू हम से का सभी के सामने लौंगे। क्या नो वह रणछोड बाबू से स्पष्ट नेवर दयान को द आए। इन विचार ने उसे साबिता ली। वह रणछोड बाबू से भी परिवार का एक आवश्यकता बनाएगा। ऐसा साबितर थाया चिन्ता से मुक्त हुआ।

रिक्का आना हुआ लिखाई पडा। उमने अपनी बसाखी को सभाला। रिक्का तय किया और उममें बठ गया।

जब वह रणछोड बाबू के घर पर पहुंचा तब नीसर ने उसे बताया कि न दसर में है। आप वही पर बने जाए।

वह उभी समय दफतर पहुंचा।

रणछोड बाबू किसी काम में व्यस्त थे अब उसे योनी देर प्रतीक्षा रह

म प्रतीक्षा करनी पड़ी। वह वहाँ बठा हुआ प्रभावशाली भावना दूने लगा ताकि रणछोड बाबू उस टाउन नहीं सके।

आखिर वह समय आ गया जिसकी अनाम का प्रतीक्षा थी। वह रणछोड बाबू की सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। रणछोड बाबू उस प्रभावशाली दृष्टि से देखते रहे। उनका यह मौन अनाम को रचिवर नहीं लगा।

बात यह है । वह कहता कहता चुप हो गया।

'हा-हा' कहिए घबराइए नहीं।

अनाम भप गया। उसका लाल चाहने पर भी रणछोड बाबू उसका मन की घबराहट का भाव गए। तब उसका चेहरा पीला पीला सा लगा और उसकी वाणी में अस्थिरता आ गई। बात यह है कि मेरे घर से पत्र आया है मेरी बहिन की शादी होने वाली है मुझे एक हजार रुपये की जरूरत है।

आप घबराते क्या है ? इसमें घबराने की बात ही क्या है ? आपकी बहिन की शादी हो रही है आप निर्भीक होकर स्थिति बतलाइए घबराए नहीं। रणछोड बाबू के स्वर में बड़प्पन था और वे इस तरह कह रहे थे जस अनाम एक अनुभवहीन युवक था।

घबराता कहा हूँ घर से चिट्ठी आई है। सरोज का विवाह २० पाँच सौ रुपये आप मुझे रायल्टी के हिसाब में अग्रिम दे रहे हैं और पाँच सौ और दे जाजिए।

मैं आपका पाँच सौ इसका अतिरिक्त भी दूंगा।

मैं आपका मतलब नहीं समझा।

मेरे पास अभी दयाल बाबू आया था। आपका हँड नोट लेकर कह रहे थे कल अनाम में दावा करेगा।

अनाम का चेहरा सफ़र हो गया। उसका वाणी अचानक हो गई। उसका रक्त जम गया।

आत्मा बसाना पर

वे आपस सज्ज नाराज हैं। ऐसे प्रेम में मित्राण हानि के और कुछ भी नहीं मिलता। पर जाने राती रोती चित्तान रह और आप यहा तोहफे में सया उगत रह ऐसी भूनी गान से क्या लाभ ?' !

अनाम अपराधी की माति सिर भुकाकर बठा रहा।

मैंन दयात का पाच सौ रुपय द दिए हैं आप इस रसीद पर दस्तखत कर दीजिए रणछाड बाढ़ ने एक रसीद निराली और अनाम १ बिना दखे ही उसपर हस्ताक्षर कर लिए।

मैं जा रहा हूँ।' अनाम न उठत हुए कहा।

क्या चाय नहीं पिएंग ?'

नहीं।

'हां मुनिज आज खुद जल महन में आएगी आप जरूर आइएगा।

'हां हा कन्कर अनाम वहा से चल पडा।

वहा में सीधा बह वाग के एक धून के नीचे बैठ गया। गाम तक बठा रहा। गुमसुम और व्यथित।

गाम के समय वह अपने आपको भुनाने के लिए नीरोव घा गया जहा मानसिक कताकार और पत्रकार एकत्रित हान थे।

उमका दखत ही आगुताप रोना यार। तुम उडे कमीन हा दोस्ता की बिल्ली उडान में तुम्हे क्या मन्ना मिलता है ?'

उमन बाई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बठ गया।

नवरण जा प्रयोगशाली कवि था गमीर होकर कहने लगा यह इसकी हमगा की छात्र रही है। जिन मित्रा का साथ करेगा उहा का यह अपने चित्रा वाटूना नेवा का विषय बनाएगा, उनकी याप्यता का स्त्री कार नगी करगा वतिर उनक मत्य का विवृण करके पेग करेगा। ऐसी नी क्या क्या है ?

शानिमित्र मिगरेट का गंगाचरर वाता सनिन यह समूरलग है

होसियार ! कुछ आनोचका की इसने खूब पटा रखा है ।

नवरंग हमर बोला पूजीवाणी मनोवृत्ति को समझता है । जिसे अपना प्रणाम करवाना होती है उसकी यह पहचान से ही तारीफ करन लगता है । उसका चित्र वह अपनी विचित्र बला में नहीं बनाता ।

पक्का 'यापारी बसाकार है ।'

अनाम ने जब मौन तोड़ा मैं भी आपकी बात नहीं समझा । आप किस बात पर बाल की खान निकाल रहे हैं ?

लौजिए आपको जसे कुछ पता नहीं । चरित्र के कौमिक अभिनय की भाँति 'शिर्मिष बाला' तुम फिल्म में काम करती ।

'पता हो 'किस ?' भाई उनकी बहन इंदुजा हैं न आजकल एक उप-यास लिख रही हैं । आप उसी उप-यास के संपादन में व्यस्त हैं । नवरंग गदगद हिलाकर बोला, वह मेज पर अंगुलिया भी नचा रहा था । तभी 'शोला साठव न प्रवण किया । उदू ब प्रगतिशील गायर । गराबी । मुहफट ।

इंदुजी हमसे माला जोड़ने वाली हैं, उसे लगड़ा खाबि पसन्द नहीं । जानत हो, वह क्या जिंदगी का असली मजा ले सकता है जो इश्केहराफी का मानन बाता हो ।'

सब खिलमिगाकर हम पट ।

अनाम को गुस्सा आ गया । वह अपनी बसाखी लेकर उठ पड़ा हुआ । तुम साहित्यकार नहीं जंगली हा कुम्हार बीच बठना भी गुनाह है । अपने आपको अपमान करवाना है ।'

वह चल पड़ा ।

सटक पर विचारा में सोया हुआ वह चला जा रहा था । समीप से कौन आ रहा है और कौन जा रहा है, उसका उस पता ही नहीं था ।

अकस्मान् रिमी ने उसकी पाँचों में गह पकड़ी । उसने रत्नरदेखा—मनोज था ।

गमो बसावा पर

एक मठ का बेटा जिसकी भी कई कहानियाँ अनाम न पढ़ले पढ़ल  
गायिन की थी लेकिन आजकल वह अच्छी कहानियाँ लिख लिया करता  
है।

मुझ गान् दा मैं एकान चाहता हूँ।

क्या ?

तुम नहीं जानते कि आज का दिन मेरे लिए कितना मनहूस है ! तूफान  
पर तूफान आ रहे हैं। परेशानी पर परेशानी आ रही हैं। मेरा मन मेरे  
सभी परिचितों को नेत्ररक्षाम से भर गया है। मैं चाहता हूँ कि यहाँ से  
हूँ बहुत दूर गिनित के पार चला जाऊँ। बच्चन की इस कविता— इस  
पार प्रिय तुम हो मनु है उम पार न जाने क्या होगा ? के विपरीत ध्रुव  
मैं सावना हूँ—मुझे नगना है—यहाँ दुःख कटुताएँ और अपमान के प्रति  
गिन कुछ भी नहीं है। मधु और प्रिय सब बकवास। सब भूठ।

मनाऊँ उसरी धार धीरे धीरे भुनता दुआ अपनी माँहा को उठाकर  
बाता मैं तुम्हें ऐसी ही जगह से चलता हूँ जहाँ बच्चन जी की कविता  
साकार नजर आएगी।'

क्या।

मेरे माय आभा।

उमने गान् पर जोर देकर कहा 'तकित तुम जाओग कहा ?'

उसने बिगुन सब कहा मेरी एक प्रेमिका है उससे पास तुम्हें ले  
चलना है।

तुम्हारी प्रेमिका ?

वह एक गुनर और स्वस्थ युवती है। तुम उससे मिलकर बड़े प्रसन्न  
होओ। यह बड़ी गिनित और ममभर है 'तकित है एक बच्चा। यदि  
वह वह तुम्हें धन-सन्निधिम प्रेम करती हुई मिल जाए तो तुम न मानना।  
उससे प्यार ना आसार हूँ नहीं पसा है। भावना नहीं व्यापार है। फिर



भी वह अपने आपको मेरी प्रेमिका समझती है। दोनों चलीं ?

अनाम कुछ दर गभीरता से मनोज के चेहरे का निरीक्षण करता रहा।  
मनाज एक चुस्त सनित की भाँति गदन की नसा की तावट खड़ा हो गया।  
इस बीच वह आत्मी आए और गुजर गए।

‘नहीं खुद तुम्हारा धनजाल तो नष्ट कर रही है ?’

‘कर रहा है पर आन में बड़ा नहीं जाऊगा। आन में तुम्हारे साथ ही चलूँगा। उसने उत्तमोत्तमता से कहा।

वैदना चान पोत के एक घर में घूम। पूरा पलेट मोती ने ले रखा था। मनाज ने उसका चुम्बन लेकर उसका स्वागत किया और फिर कम में लगे हुए प्रभु के चित्र से समा-याचना की।

अनाम अपनी बमागी पी कुर्मी के नीचे लिमकावर उठ गया। मनोज ने सोनी का उसका परिचय देते हुए कहा ‘य प्रसिद्ध चित्रकार हैं। सत्तर है। यह तुमसे यान भरा प्रमिका से मिलने आए हैं। और नन तुम्हारे घर में रह सच कुछ समझा दिया है। साना न एक गरास्त भरा दृष्टि अनाम पर फका। इसके बाद मनोज मोती से इसी मजाल करता रहा। अनाम नासमझ बच्च का तरह उनका बातों का मुनता रता। तब मनाज साना का नजर मीतर के समर में चला गया।

अनाम का गाना का बात मुँही चुम गई थी। उसने गई मिश्रा का भी गाना हा ग्याव था कि उत्तम पुष्पत्व नहीं है। क्या नहीं वह अपना परी तो करे। ‘स प्रमिका के प्रम का आधार इत्य नहीं पमा मावता नहा व्यापार है। तब ?’

मनाज नीले मुनगुनाना हुआ वापस आ गया था।

अनाम के मुँह पर पसीना दमकर बाला तुम पाना-पाना क्या हा रह हा ?

‘नहीं तो ?’

घाटमी बसाखी पर

छपा रह हो ।

वान यह हरि में ।

गोक मे ।

और मनोज न तुरत उम बसाखी पकडवार्द और उसनी एक भी न  
मुनर उमे मातर क कमरे म त्वेस दिया ।

। उम घासीशान कमरे म कामोत्तेजक चित्र टग हुए थे । अनाम न सानी  
की नजर बचा के उन चित्रा पर दृष्टि डाली ।

आदए ।

वह उसके समीप लज्जिले किंगोर की तरह भदन नीची कर बठ गया । /

मनाज न बीच म अवरोध उत्पन्न किया । उमन सक्न कच्चे सोरी  
का बुताया और काना-ही-काना म कुछ कहा । सानी उसी स्वर म कुछ  
बहुर मुस्करा भर दी ।

साना न अनाम के हाथा को अपने हाथा म ने लिया । वाली आपकी  
टांग का क्या हुआ ?

वह जम स हो ऐसी है ।

ओह !

किडकिया उर कर नू ?

। अनाम न कहा हा ।

किडकिया वल् हो गइ ।

पाच ही मिनट के बाद अनाम वापता हुआ कमर के बाहर निरला ।

वह पीडित मनुष्य की तरह था पर उमकी आवा म एन अजीब-सी  
हस्रन थी । २

गोनी न उगवा जोर म हाथ पकड लिया ।

माप लगने है ता क्या हुआ ? क्या नगडा क वान बच्च नही हान ?

आप इतनी होनता का अनुभव न करें। आप बहुत अच्छे पति बन सकते हैं।

अनाम ने सानी का हाथ प्यार से पकड़कर कहा, अभी मुझे जाने दो, जाने दो, मेरा दिमाग ठीक नहीं है। मैं जीवन में सफल हो जाऊंगा। मैं पुरष हूँ सम्पूर्ण रूप में पुरुष।

आध घंटे के बाद अनाम मनान को कह रहा था मैं एक क्षण के लिए भी नहीं भूला कि मैं लगडा हूँ। मछी टांग सोनी के मुँह के आगे मुझे झूलता हुआ-सी लगी और मैं नरवत्स हो गया। मुझे लगा कि मैं सत्कार का सबसे अभागा और दुखी पाणी हूँ। लेकिन सोनी के असीम स्नेह ने मुझे बचा लिया। मैं भूल गया कि मैं क्या हूँ? मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मैं लगडा हूँ। उसके प्यार की उत्तजना ने मुझे सब कुछ भला दिया।

यह धर्म की बात है। ईश्वर की दी हुई सखा का हम वरदान की तरह ग्रहण करनी चाहिए।

वरदान की भांति मैं अभिशाप का ग्रहण नहीं कर सकता। मैं एक महत्वानाश प्राणी हूँ। मैं छोटे से छोटे और बड़े से बड़े आदमी से अपना सम्मान करवाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मुझे सभी के वर प्रभ की दृष्टि से देव दया की दृष्टि से नहीं। किन्तु इस टांग की वजह से मुझे बहुत अपमानित होना पड़ता है। 'म टांग का क्षणिक अपमान मुझे क्यों के सम्मान से अधिक पीड़ाजनक लगता है।

मना ने अनाम के दुखी भावा को स्नेह से दुरुगत हटा कर उस टांग का लेकर सभी तुम्हारा अपमान कर सकते हैं पर दूँ नही। 'दूँ ने आज तक जो प्रतिष्ठा पाई है, वह तुम्हारे कारण। सुना है कि उसका कहानी सप्रह के प्रसंग पर यहाँ की महिला जाति परिषद् एक समारोह कर रहा है जिसका सम्पन्नित्व यहाँ के बाद बड़े सठ दमनलाल मानपाणी कर रहे हैं।

घामा बसाला पर

‘इन्ही मेरी भावनाओं की कद्र करनी है। मैं उसके उपयास पर इतना महत्तन करूँगा कि वह निश्चय ही एक श्रेष्ठ कलाकृति होगी।’

तब इन्दु म विवाह क्या नहीं कर लेते ?’

मैं उसे कहना चाहता हूँ पर मेरी हिम्मत ही नहीं पड़ती। उसके उत्तर का लेकर मेरे मन में भय-मा लगा रहना है।’

तब मैं गात्र कहना चाहिए। वह एक महत्वाकांक्षिणी युवती है। वह समाज में अपनी बहुत प्रतिष्ठा चाहती है। केवल एक यही भावना ही तुम दोनों में समान है।

मेरी भी ऐसा ही इच्छा है मनोज। मैं इतना महान और लोकप्रिय चित्रकार बनना चाहता हूँ कि मेरी टांग को भूलकर मेरी कृतियाँ पर चलायें जा जाएँ। और इन्दु स्वयं विवाह की इच्छा प्रकट करे।

ऐसा संभव है। क्योंकि तुम एक प्रतिभा सम्पन्न चित्रकार हो पर तुम्हारा नयक तुम्हारे चित्रकार के सामने मुझे ज्यादा अच्छा नहीं लगता।

रात का गहरा आँचल पल बना था।

उत्तम हठ मनोज ने कहा, घर जाकर अराम करो। अपना मन की हीनता का मारा। बहुत-से व्यक्ति सगड़े-बहरे हाते हैं। व तुम्हारी तरह पाठित चिन्तित रहकर जीवन का पीडादायक थोड़े ही बनाने हैं ? और मोती का तुम बहुत पसन्द हो।

हा उमन मुझे सबकुछ नया आनंद दिया है। मैं उसका हृदय में आभास हूँ।

## तेरह

तीन दिन बीत गए। अनाम रात के सनाट व सगीत को बड़ा बचनी स मुन रहा था। वह दो दिन स निराश विकृत मस्तिष्क वाले प्राणी की तरह जीवन की नश्वरता और व्यथता पर विलाप कर रहा था। वह अनामिका का कहता रहा जीवन बया है। इन्दु उसस भिन्न नहा आ सकती तब उसक अपन प्राण यथ हैं अथ और सम्मान यथ हैं। यह कला व्यथ है।

यह नारी बड़ी विचित्र है दुर्निवार है।

प्रेम करती है द्वेष करती है और उन दाना का सामान्य लेकर पुष्ट का छसती रहती है।

अनाम का एक पत्र मिला था। इन्दु न काय-व्यस्तता व कारण न अने की क्षमा मांगी थी। क्षमा के साथ उसन अनाम का एक सान्ना भी दी थी वह प्रेम महत्वहीन है जो प्रयसी क सम्मान को घटा दे। तुम्हार घर वाले जन मरे और मरे तोहके के बारे मे सुनगे तब व क्या विचारगे ? व सार्चंग कि वह युवती उनके लडके का पथ विमुक्त कर रही है। और तुम भी कने मनुष्य हा। मानवीय और आत्मीय नाते रिश्ता का भूलकर तुम ए लडकी व पीछे भागल हो रहे हा। प्रेम का ऐसा रूप हमारे परिवारा म गोमनीय नहीं हाना। मैं तुमस प्रार्थना करती हू कि तुम मुझे समझने का प्रयास कराग।

वह उस समझन का प्रयास करणा, इस विचारन उसपर हल्का आघात किया। उस यह उम्मीद नहीं थी कि इन्दु उम इस तरह का उपाना दगी। स्वयं न मिलकर इस पत्र द्वारा ही उसक गहरे सम्बन्ध म पीनपन लायगी। अनाम ऐसा नहा हान दगा।

रात व दलन तिमिर व साथ वह इन्दु व पाम जायगा। उस सारी

आत्मा बमाखी पर

मिति के बारे में बहेगा। उसे समझाएगा, आज के युग में एक प्रेमी किम प्रकार एम टियावा में बच सकता है? आज हमारे सम्बन्ध के प्रकाशक रूप में यह ताहके मर्ते और पार्टिया बन गई हैं।

एक तारा टूटकर मिरा।

अनाम की लगा कि उसकी सबसे प्यारी भावना पर आघात हा गया है। उसका मुख पीला गमगीन और उदास हा गया। उसे रह रहकर दयाल पर ईप्सा और गुस्सा आता था। उस कमज़र ने इस बात का प्रचार प्रसार कर दिया पाया? दुष्ट है न कष्ट देन में ही उसको आनंद आता है।

हम तरह बचनी और आत्मकाया में रात बीतान लगी। उसने लाख चांग पर उस रात उसे एक पल के लिए नींद नहीं आई। रह रहकर उस श्वाभ आता था कि वह इंदु के गिना तनावा के बेचनिया का पिंडमात्र है।

## चौदह

तिनिज के काले भाल पर बाहनूर हीरे के सहग मूरज ली बिंदी दीप हई।

अनाम मुरन दनिज कायवाही में निवस होकर इंदु के घर की आर बना। इतन सवर-मवरे अनाम को दखनर इंदु का पिस्मय हुआ। वह उमे चाय का एक प्यात्रा देती हुई बोनी तुम्हारी आत्मा में नगना है कि तुम रात भर नहीं सोए।

तुम्हारा अनुमान ठार है।

फिर तुम्हें कौफी पीना चाहिए।

नही मुझे काफी की जरूरत नहीं है। मैं बिलकुल ठीक हूँ। बसल मु रात बात के बारे में तुमसे पूछना है।

बहा।

मुझ मुझ ऐसा पत्र नहीं लिगात चाहिए। यह पत्र मर हुय म क  
प्रान ए साय उग गाता है। मुझ पीछिन कर मरता है मुझे ईप्पातु बन  
सरता है मर भाव जगा म तूपा उठा सरता है।

इदु न मत्रवत् अपना दृष्टि घुमार्द तुम्ह आबग म धाकर कुछ न  
बहना चाहिए। हमार भाव लार म विगप एर लात है यह है हमार  
कसद-नार। हम मानवीय भावनाआ और सगुणा क पुन बन रहत है  
यनि हम स्वय उतर। व्यवहार म नहा लागत म हमारा हर बाय एक  
घाया बन जाएगा।

लरिन मैंन अपने कतव्य क गिन्द कुछ गही किया। उस समय के  
उत्तजित क्षणा म मरे जसा घादमी अपना सबस्व लुटानर नी अपनी चाहने  
वाली या उसकी पसन्द की चीज लाकर दया। यह बिल्कुल स्वामाबिद है।

रणछाड बाबू ने जा कहा उसम ऐसी काई बात नहीं भलवती थी।  
सुमम एक प्रेमी की इया है। जब तुम्ह यह पता लगा कि रणछोड बाबू  
मुझे मरी मनपसन्द का तोहफा देना चाहत हैं सुमन दयाल स अपनी मा  
बहिन की दुहाई देकर रपय लिए। यह बिल्कुल गलत बात है। मुझ कतव्य  
पसन्द नहीं।

अनाम हतप्रभ सा इदु के कठोर शत्रु का सुनता रहा।

मह अपनी दृष्टि घुमाकर बोली रणछाड बाबू न तुम्हारे हैंडनोट  
दयाल बाबू स लेकर मुझ दे दिए हैं। उह भी तुम्हारा यह व्यवहार जरा  
भी पसन्द नहीं। यदि मरी इज्जत का सबाल पदा न होना तो वे दयाल को  
एक पसा भी नहीं देत। उहोन मुझसे कहा दयाल कह रहा था कि अनाम  
की सारी कमाई इदु क घर जाती है। अनाम के घर वाले मूखा मरते हैं  
और यह इस्कमिजाजी म बरबाद हो रहा है। अब तुम्ही बताओ कि एक  
लडकी यह सब कैसे सह सकती है? जो काई इस बात को सुनगा, वह मरे  
वारे म क्या सोचेगा? तुम्हारे घर वाले मुझ मास्टरनी को एक कुलटा और

आदमा बमाखी पर

छिनाल व अतिरिक्त कुछ समझ ही नहीं ।

तुम्हारा ऐसा मोचना सबथा निराधार है ।

मैं तेमा कहा साचती हूँ ? ऐसा ता दमर सोचत है और मैं सुनती हूँ ।

अनाम । 'उमन थूव निगलकर दुख से धीरे धीरे कहा 'मैंने तुम्हारे घर  
सौ गप्य भज लिए हैं । अविष्य म तुम पहल उनका ध्यान रखागे । इन्दु ऐसी  
मन्त्रा नही है जिसके पीछे तुम अपना सबस्व सुग दो ।

अनाम को यह बात टुटत सम्बन्ध की शुरुआत गयी ।

इन्दु मुझे समझ की कोशिश करा ।

मैं उनकी आवश्यकता नहीं समझती । म तुम्हें एक अच्छे आदमी और  
थोड़ा कलारार के रूप में देखना चाहती हूँ ।

इन्दु व अम वाक्य न बात के मिलाने का समाप्त कर लिया ।

अनाम उठने लगा । इन्दु न सुनत उससे कहा 'तुम्हें मरी बाता का  
समझन का प्रयास करना चाहिए । इन बातों में हमारे सम्बन्ध में अन्तर  
नहीं आणगा । और सुना परसा मेरा स्वागत हान वाला है । तुम्हें कहा  
प्यार आता है ।

जब अनाम वहा से चला तब उसका मन सुन्न-सा था । उसका मन म  
धुन्न-सा छा गइ । वह घर ही घर उधर की गलिया म घूमता रहा । उसका  
मार कपड़े भोग कर गीत हा गए । बसने म उसे तब-सीफ हाती थी । तकिन  
आज उम आनन्द आ रहा था । कभी कभी उसे भयंकर गुस्सा भी आता  
था कि वह क्या जित्त है इसमसार म ? उम जमे घम भग गणुप्य का जीवन  
का क्या हक नहीं । वह थोड़ा कलारार है तकिन क्या बनाकार का जीवन  
सम्मान करता है ? यहा नाग बनाकार का एक मूंग और वकार ध्वजित  
समझत है जा अपने महत्वपूर्ण जीवन को बला की माधना म तराव दिया  
करता है ।

वह इसी प्रकार मोचना विचारता मनाज व घर पहुच गया । मनाज



लारत का चटर्लोज लवर पड रत्ता था। उसकी वसाखी का लट-वट' मुनरर वह बिना दखे ही वाला आआ अनाम आन बवक्त कसे आ गए ?

अनाम न कोद उत्तर नही दिया। वह गम्भीर भुत्ता म बठ गया। उसका मुह उतरा हुआ था तथा उसकी आत्मा म व्यथा की चिनगारिया चमक रहा थी।

यान क्या है ? उमने पुस्तक बन्द करके कहा।

'इन औरता के बारे म तुम्हारा क्या ख्याल है ?

पश्न ऐसा था कि मनोज सावधान हो गया। वह अनाम के घहरे पर अपनी दृष्टि गाढकर बोला यह आन ही तुमन एतम का प्रयाग कर लिया।

और आत्मी यत्ति लगता और गरीब हो ? उमर रत्ता परिवार हा तो उस क्या करना चाहिए ? वह उत्तजित होकर बोला।

एतम के जान हाइजाजन का विस्फाट। रतुबर में जरा अमी मन्नी के मू म हू। इस चक्कर म पडना नही चाहता।

तब पस वाल हा न, दूमरा क रत्ता म तुम क्या पडा ?

मनाज की मुत्ता गभार ता गर्। उमकी तात्तग दृष्टि न अनाम की आगो के अवमान और कण्ठा का समझ लिया। वह प्यार म थाता औरत सिफ औरत है। वह प्यार करनी है तना की तरह बन्द घूणा करली है निधर्याता का तरह। वह स्नह र्नी है यगाग की तरह और उरगा करनी है तुम्हारी रत्ता का तरह। वह मनता की तरह मद्रतूर और गरल धातू की बमन का तरह स्वनत है। बहन का तात्पय यग है कि औरत सिफ औरत है।

उमकी बानी बन्द होने ही अनाम न पूछा रत्ता की तरह उपगा ?

'रत्ता तुम्हे प्यार करता है मरा य अनुमान करने निरता। वह एत

महोपासीणी युवता है। उसका लक्ष्य जीवन में श्रेष्ठ पद पाने का है। वह बगैर स्वामी और चतुर है। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि तुमसे सम्पर्क ज्ञान में उसकी रचनाएँ मशायित हो जाकर अच्छे से अच्छे पत्रों में छप सकती हैं। इसलिए तुम्हें अपना दास्त बनाया। लेकिन वह एक लम्बे का प्रस्ताव जीवन-भावी नहीं बना सकती।

यह तुम्हारे मन की घणा बात रही है। वह तुमसे बातचीत नहीं करती है। इसमें तुम उसका बार में ऐसी बात बताने हो।

मैं बकता नहीं हूँ ठीक कहता हूँ। आजकल वह रणछोड़ बाबू का साथ मात्र में घूमती है। उसका सम्मान होने वाला है, उसमें बड़े-बड़े आदमी आगे। तब मैं देखूंगा कि कब तुम्हें हाथ पकड़कर अपने पास बिठाती है या नहीं ?

वह मुझे प्यार करती है। यह वाक्य उसने जब बड़े आत्मविश्वास में कहा तब उसके हृदय पर मुक्ता का लगा। जैसे उसने अपने आपको जबरन ही यह विश्वास लिनाया हो।

## पन्द्रह

सौ गण्डा की पहचान की चिट्ठी आई थी। मा न प्रति स्नहपूर्ण गाने में उसकी आशीर्ष निमी थी। उसकी चिट्ठी में उसकी आन्तरिक भावना बताना पूरा पूरा पढ़ रही थी। उसने मानस की मीठी-मीठी निगाहों को तुम्हारा छापी बहिन बड़ी निगा में बिम्बर पर पड़ी हुई है। उस टुकड़ निमा लिया हा गया था। वह जनी दुबल और वृद्ध हो गई है जमी प्रेम छायाएँ। गरीर मूलरर जाग हो गया। उसकी दीर्घमयी आँखें केवल गडग के रूप में रह गई हैं। प्रनाम। तुम्हारे द्वारा रण्य मिलने पर मैं उसका प्राणा का बचाने में समय हो गई हूँ। तुम्हारे रण्य पाकर मुझे लगा

वि तुम्हारा हृदय अत्यन्त निमल और पवित्र हो गया है। तब तुम्हारा मुख नवजात शिशु की पवित्रतम भावनाएँ लेकर भर सम्मुख नाच उठा। मुझ तुम इतने रुपये हर माह भेजत रहो तो मैं इन्हें पर्याप्त समझकर एक स्वाभिमानिनी का जीवन बिता सकती और तकाजा द्वारा उत्पन्न मामूली मज्जापाया से बच सकती।

एक बात मैंने और सुनी है। वह बात तुम्हें अप्रिय लग सकती है पर वह बात में अधिक घातनामय लगगी। मित्र का नाम नहीं बताऊँगी लेकिन वह अभी भठ नहीं बोलता। उसने लिखा है कि तुमने एक मास्टरता को अपनी जीवन साथी के रूप में चुना है। कदाचित् तुम्हें इन मास्टरतियाँ क जीवन चरित्र का ज्ञान नहीं है। ये चरित्र की भ्रष्ट और स्वभाव की उच्छल होती है। अभिनेय में कुछल और प्रकृति की जर होती है। यदि ऐसा न होता तो वह तुम्हारी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा आमाल प्रमोद में तथा सर सपाटे में खर्च नहीं करवाता। मैं उसे बठोर स्वभाव वाली और निन्द्य भी कहूँगी क्योंकि वह तुम्हारे घर की दगा से परिचित हाथर भी तुम्हें अपने कूटुम्ब के प्रति उत्तरदायी बनने को नहीं कहनी। ऐसी युवती का धुम धूम लक्ष्मी बनाने में कुछ से नहीं रह सकती। वह एक सभात कुत्र की होनी चाहिए। उसके मुख पर गरिमामय मुकुमारता और उज्ज्वलता हानी चाहिए ताकि मूल और व्यास में भी उसका हाठा पर जीवन मरी शास्त्रन मुस्कान नाचती रहे।

मा का यह पत्र उस उत्तजित करने के लिए पर्याप्त था। इंदु के बारे में मा के जो विचार थे वे बहुत निम्न और ओछी प्रकृति के धातव थे। इंदु एक सभात और थप्ट मृदुल स्वभाव वाली है। उसने स्वयं मुझ जिना पूछे ही मेरी मा को रुपये भेज। यह उसकी थप्टता का प्रमाण है। फिर उसने मस्तिष्क के मज पर एक माना निन उपास आहृति मरी हा गई। जिसका चेहरा दारण दु ख के कारण विवृत हो गया था। जो एक

प्राप्ति वसन्तो पर

प्राप्तान्न कलविनी-सी उसके सम्मुख खड़ी होकर कह रही थी कि लोग उस मन्त्रा पर केवल एक दृष्टि से विचार करेंगे कि वह अनाम की काना पर एग कर रही है। अनाम अपनी मा और बहिना को भूखा मारना और शत्रु के लिए मुख के प्रगाधन एक्जिन करता है। वह निरन्तर विविध कल्पनाएँ करके अपने आपको पीड़ित और उत्तेजित कर रहा था।

चार मज रात थी।

धन प्रधिर नेत्र हातर चमक रही थी। सड़क पर यानियों का आवा-  
गमन मन्द पड़ गया था। तागे, रिक्शे और वसों उमी रफ्तार से आ-जा  
रहा था।

प्रवर्तमान वरणा की मा ने उसका कमरे में प्रवेश किया। उसके चेहरे पर उग्रता भरी हुई थी। उसका स्वर घमराया हुआ था। उसने धीरे से उसके निकट बैठकर कहा अनाम जाहू इस वरदा का क्या हो गया है ?  
क्या तू इस दम ममभाइए न ?

क्या क्या क्या ?' आश्चर्यचकित हातर अनाम न पूछा।

तूमा क्या ? एक लड़कन में वह प्यार कर बठी। उसके साथ घमती  
मिलनी लगी है। मना बनाइए क्या यह उम्र प्यार करने की है ? अभी  
तो बच्चा है।

उनको ममभा जानि।

बच्चा ममभी नही। कम रात में उस नरुडी में पीटा भी उसे जान  
ने मानने की घमती भी दा पर परिणाम कुछ नहीं निरता। आज रातरे  
सबेर वह फिर उस मडने में मिलन चली गई।

अनाम न वरणा की आगा में अग्नि-यगी ताक ममय एक नारी के नया  
में आ आगुनता और धिता विग्रमान होती है वह लगी। उसका चहरो  
मरे-मरे-मरे लगा।

अनाम न धन दम दूरा कहा आप उन गानि में ममभाइए यह

मारना-पीटना काम को और बिगाड़ देगा। क्या आप उसकी तरफ्त गान्ग की व्यवस्था नहीं कर सकते ?'

कस कर सकते हैं ? परिवार की दरिद्रता और लड़की की कुम्पना दाना ही बाधक हैं। देखिए वह आपका बहुत कहना मानती है मुझ विश्वास है कि आप उसे समझा दोगे और वह आपका कहना मान लेगी। अच्छा मैं चली उठाने इस बात को किसी का न कहने के लिए कहा था। लेकिन मैं विश्वास थी आपको कहना ही पड़ा। मान मयादा का प्रश्न जा ठहरा।

वह अनाम का उत्तर मुन बिना ही चली गई।

## सोलह

आयोजन में जैसे ही पुस्तक अनाम के हाथ में आई वह ही उसका मुह उतर गया। एक आघात की उस स्थिति में भी बचपना नहीं था। उसका चेतना विनम्र हो गई और उसने तीखी और घणा मरी दृष्टि में हट्ट को देखा जो मठ भित्तों में गिच्छाचारपूण रूप से मुस्कराते-यातायात कर रही थी। प्रधान अतिथि पार्क मिनिस्टर के बड़े अमीर तर नगी आया था। समापति पगड़ी पन्न हुए दो चार व्यक्तियों में आचार से आचार कर रहे थे। उपस्थिति बार बार हट्ट की आर लय में उसका आनित्या का प्रयोग कर रही थी।

हट्ट ने उमन साथ लिखा बसा छन लिया। वह लिखावर आत्म की आत्मा हट्ट में भर आया। उसका आत्म विम्वर भर हट्ट में उमन उठी।

अनाम ने हट्ट का गार्नियर प्रशति तो उन और आगत्य लिया। अनाम विनम्र उमन हट्ट का बसावित्या का पूरा-पूरा टुटारा लिया। उस प्रशतिन कराया। उनका पार्क मिनिस्टर लिया। अनाम आगत्य

प्रादमी बमाथी पर

मिना म कहकर उमका कहानिया की जगह-जगह चचा कराई, उमका फल  
उमन उसे दस अपमान के साथ दिया। उमकी इच्छा हुई कि वह रा पडे।

उमन २२ दिन से एक बार पुस्तक का फिर खाला और समपणवाता  
पूछ पना—प्राग्णीय श्री रणछाड दास जी का जो साहित्य के प्रेमी और  
पापक है।

और जद अनाम न वन दिन पहले उस पूछा था, तब उसन कितन  
प्राग्णीय स्वर म कहा था कि वह अपनी पहली कृति उसे ही प्यार के साथ  
भेंट करेगी। फिर इन्दु ने ऐसा क्या किया? उसके सामने ऐसी मजबूरी  
क्या आ गई?

तभी एक मञ्जन ने कहा मिनिस्टर साहब आ गए हैं। मीड म क्षण  
भर के लिए हल्का कोताहल उठा जो बाद म गहरी गति म बदल गया।  
समापन और प्रधान अतिथि ने अपने आसन करतन ध्वनि के बीच ग्रहण  
किए। स्वागत मन्त्रिणी विद्याम्बा के भाषण के बाद स्थानीय साहित्यकारा  
न भाषण हुए। अपने भाषण म अनामन इन्दु की बहुत प्रशंसा की। हाताकि  
आज वह इन्दु म भाग्य नाराज था लेकिन वह इन्दु का सावजन आला  
चना करना नहां चाहता था। समा करन म उसे डर था कि इन्दु उमने सना  
न किए बिगड सकती है। उसने अत्यंत विनम्र गंदा म इन्दु की प्रशंसा  
करत हुए कहा श्रीमती होमवनी लवी उपा मिना विमला दूधरा चन्द्र-  
किरण मोनरिक्मा तथा मालती पन्तकर के प्राग्णीय कुमारी इन्दु (वह क्षण भर  
आ और उमने मन-ही मन उग मरी प्रिय इन्दु कहा) न अपनी मगजन  
समना द्वारा जो साहित्य-मञ्जन करना प्रारंभ किया है उमने नारी-मना  
ममि की मयाथ अनुमति का चिपण हुआ है। उतरी बला नारा जीवन का  
एक अना पन्तू निण हुआ है। सारी की दृष्टि न मैं इह ममी दक्षिणा  
म अग्रणा मानता हू। मैं अनुसामना करता हू कि व मी भाति निरन्तर  
साहित्य रचना करनी गहरी।

मिनिस्टर ने साहित्य पर एक ग्राम भाषण दे दिया। उसने मन में इतना ही कहा इंदु जी अभी उदीयमान लेखिका हैं साहित्य-संजन में वे सीधे ही श्रृष्टता प्राप्त करगी ऐसी आशा है।

आयोजन समाप्त होने के बाद रणछोड़ बाबू ने इंदु से साहित्यिक सभ्य के मंत्री के यहां भोजन करने का जाने के लिए कहा। अनाम एक कोने में खड़ा हुआ साहित्यिक मित्रा की फतिया सुन रहा था। एक तरफ कवि कह रहा था बेचारे नवरस के तीन कविता सग्रह निकले पर उसने लिए कोई भी आयोजन नहीं हुआ।

एक व्यापारी ने भद्दी हसी हसत हुए कहा इंदु जी के गुरु अनाम जी ने कतनी ख्याति अर्जित कर ली है पर उनका समान में आयोजन तो क्या होती।

अनाम के मन में तितमिताहट।

रणछोड़ बाबू अनाम को उस भोजन में सम्मिलित करने के प्रयत्न में थे। उनकी विचारधारा एक प्रतिष्ठित की हस्त में बारी गया थी अतः उन्होंने अनाम को इंदु के साथ आगनी गभारला को कहा था। प्रायः वह इंदु के गम में अगनी मानी भद्दी पत्नी का प्रगल्भा ही करत रक्त थे। उस वक्त एक ही बात का सुन था कि उनकी पत्नी गार्मिन्स गति का नया है।

इंदु का सन्तुष्टि उम्र भर था। रणछोड़ बाबू बार-बार आग्रह कर रहे थे पर इंदु उनका आग्रह पर विचार ध्यान में लगे हुए थे। कब कब हर बार इतना ही बतानी थी। मैं चला हूँ और बागम जाना में मग्न हो जाती थी। उस अनाम प्रगल्भा गुनन में अग्रत ध्यान था था।

पता में रणछोड़ बाबू का अनाम हर बतना पता।

आत्मा बसासी पर

राम अपना महलिया से बिना मांगी। उसे इस व्यस्तता में अनाम का भगन तक नहीं आया। अनाम उसी कोने में खड़ा हुआ इंदु के आग्रह का प्रतीका कर रहा था और मन ही मन वह प्रशंसा से इंदु में उत्पन्न प्रियावतन दान के शारे में एक मनावतानिक की तरह विवेचन कर रहा था।

वह चला। उसने अनाम का नहीं देखा। अनाम धृष्टा से फूटकार कर मैन स्वर में चला जी ता चाहता है कि इस घमण्डो का यश पर फूटकार और उस दाग निराउ कि तू भाज जो है वह मेरे बूने से है। पर उसने भाव में मन विवेक को नहीं छोड़ा। उसे तयाल आया कि उसका तनिक भाषा में बाहर हो जाना, उसने और उसके प्रेम के लिए सबका धातन हो सकता है। उसी अपने आया कि भाषा को धुरान के लिए अपनी जेब में बाता चमा निकानकर लगा लिया। अपनी उमाखी को वगद में दबा कर बैठा। महिना जावृति परिपद की कुछ मन्मथाए अभी तक सामान समर रही थी। बसासी की कल-खट् मुनकर वह त्याभरा दृष्टि से अनाम का तनिक लगी। अनाम उनकी आवा की भाषा पट गया। और उसी इनकी कल-खट् उठाए तिनना एक साधारण आदमी महजता से नहीं उठा सकता।

मांगिया व शीघ्र में ही इंदु मिला गई। वह प्रेमपूर्वक हल्की नाचना से बोला कहा तू मांगे ? मैं तस्यात इनकार करती-बगती थक गई ?

क्या ? उसने त्रिभुवन धनिष्ठ से कहा।

माह ! मांगितर मगम व भभी के घर गाना गान नहीं करता है ?

रामाद बाबू तात गये हुए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मुझ मांग कर।

क्या ?

मुझ मेर मित्र के घर जाना है।

गमा नहीं हो सकता।



दावा, मुझ मजबूर न करो।

'पहले तुम अपनी चरमा हटाया।' कहकर इन्दु ने अनाम का चरमा अपने हाथ में ले लिया अब कहा मैं कहा चत्पा।

अनाम ने अपनी दृष्टि का दीवार पर जमाकर कहा, मैं कहा जाऊंगा।

पर क्या ? क्या मुझसे बाई गलती हुई ?

नहीं।

फिर तुम मेरा अपमान क्या करा रह रहा 'बला न अनाम ?' उसका स्वर अति रोमन और मधुर हो गया। अनाम ने उमकी बड़ी बड़ी आवाज में देखा प्यार मेरा आग्रह। अनाम गहरी सास लेकर बोला, बला।

## सत्रह

अनामिका के मन में अनाम की प्रति पूज्य और आदर और सम्मान नहीं रहा। अनाम पूज्य तथा सत्य हाकर यत्रत अपने काय करनी थी और उसी बात का उत्तर दिया करता था जो उससे पूछी जाता था। अनाम की अपने परिवार की प्रति उपमा अनामिका को पसन्द नहीं आई। यह प्रायः अनाम का दखकर स्पन्दनहान सा हो जाती थी और उसका नारी-मुलम हृदय पर नास की रेखाएँ छा जाती थी।

अनाम का प्रेम उम प्रेम न गकर एक वासना लगी एक उद्दाम आनन्द गंगा का यौवन में प्रत्येक तरण हृदय में आ जाता है। वह साक्षात् करती थी निम्न-हृदय वरुण प्रकृति का एक आवाज हो हो सत्यता है यवा स्नह प्यार और मानवीय भावनाओं का अन्त में छिपाए यह कलाकार अपने परिवार वाता के प्रति अनन्त दूर हो गया। 'तुम हर माह हाता में चाय-पान का दस-बास स्पन्दन कर सत्यता है वह अपनी बहिन का बीमारी में प्यार कस बन सत्यता है।'

अनामिका का यह सब पसन्द नहीं। वह अपनी मा का क्षण भर के लिए भी नाराज नही कर सकती। जब कि उसकी मा एक पापात्मा न बलविनी अशरीरवती है। मा के हृदय को परखन वाली अनामिका की अभ्यस्त आँखें अब यह भी समझने लगी हैं कि मा को यह प्रश्न पूछना कि मरा बाप कौन है, बड़ा कष्टदायक लगता है इसलिए आगरा उसने मौन धारण कर रखा है। इस पर मा वह मा को क्षण भर के लिए दुखी नहीं दल सकती। वह स्वयं मिट सकती है—मा की एक आह पर।

अनाम उसकी प्रकृति के नितान्त विपरीत है अतः उस वह पसन्द नहीं। कई बार उसने काम छाड़ना चाहा पर दयाल बाबू न ऐसा नहीं करने दिया।

आज काय समाप्त करके वह जस ही जान लगी कि अनाम ने लिखे हुए सन दवर कहा इट लटर-बाक्स में डालती जाना और यन्त्रि नीच घरवा होता ऊपर भेज देना।

अनामिका 'हा कहकर चली गई।

बरन की मा स बात किए हुए आज तीन दिन हुए थे। उस आयोजन में इंदु के प्रति उनका मन में कुछ एमे भाव उत्पन्न हुए जिहान उस चाह कर भी कुछ काम नहीं जाने दिया। इंदु ने एक बार कहलवाया भी था लेकिन उनमें व्यस्तता का बहाना बना लिया।

आज उस अपना मन बाला-बाली लगा। कद राज में उनमें स्वता के जवाब नही लिखे थे इसलिए उसने एक साथ कई पत्र लिखे और फिर बगदा में बानचीन करने की सोची।

बरन उनका कमरे में आइ हैं। उनका गदन अकड़ी हुई था और उसने अपना साड़ी का छोर कमर के चारों ओर लपटकर गंध रखा था। वह धुपचाप धाकर अनाम के गामन वाली कुर्मी पर बठ गई और पुस्तक के पृष्ठ पलटन लगी।

अनाम ने व्यर्थमित्र न स्वर में कहा, 'तुम भी जानती हो ?

आपसे ज्यादा ।

वह चुप हो गया ।

‘तुम्हारा बहुत आता है ।’

जा ।

पर मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर तुम्हें देना ही होगा । तुम्हारी माँ मेरे पास आई थी ।

मैं उस समय व म कुछ भी सुनना नहीं चाहती । मैं उस युवक का चाहती हूँ । प्यार करती हूँ ।

एक दिन तुम मुझसे भी प्यार करती थी । तुमने कहा था कि मैं केवल ‘आपकी हूँ ।’

लेकिन अब मैं आपसे घणा करती हूँ ।

वह उपदेशक भी तरह होगा सुनो करना तब उग साचना चाहिए । माँ-बाप का हम पर क्या अहसान होता है ? क्या होता है उपकार होता है । हम उनकी बात को समझना चाहिए ।

मैं हर बात का समझती हूँ । माँ हठ क्या करती है । वह मेरा विवाह ‘परितोष’ से क्या नहीं कर देती ?

वह एक गपगर्जित के साथ अपनी बेटा का हाथ किस द सरती ? । फिर उसका घर गान्धरी भी देगना होता है ।

वह एक कारखाने में मजदूर है । साठ रुपया साना है ।

केवल साठ रुपया ?

हाँ साठ रुपया वाला प्राणी ही मुझ प्यार कर सकता है । हजार रुपय के मान दान का मैं क्या समझ साऊंगी ? वह अक्सर नहीं लूगा । एक सुन्दर-स्वस्थ क्या मुझे तो आप भी प्यार नहीं कर सकते ।

तुम मेरी बात का मय का नहीं समझता ? उमरा स्वर टप पड़ गया । वह परामर्श देता हुआ कहता गया तुम्हारा बाबा (पिता) अल्लुवर

का तलाश में है। लेकिन तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। भरिताप आज  
तुम्हारे साथ प्रेम का ताल भी रख सकता है।'

न। वह मझे सच्चे हृदय में चाहता है।

अनाम गानिका का तरह अपनी दृष्टि का बिट्टों के बाहर उड़ाता  
हूँ। योवन अत्यन्त निदय होता है। वह किसी की चिंता और पथ  
नहीं बना। वह मनुष्य के रिश्ते की एक नम प्रकार में चलाचल का  
नाम है। वह मनुष्य अचानक होता है।

मुझे वह अचानक वन प्यारा है। बरन उठ गई। उसने नयुने  
दुआर पर मुझे आपकी उपदेश की जल्द नहीं। वह मैं भी बहुत दीदी  
का बार में ही बनी तब ? क्या आप मुझे दीदी का माँ के कहन पर  
छाड़ देंगे ? नहीं नहीं। उमका मत भरो आया। उमका स्वर बिनम्र  
हो गया अनाम बाबू। आपन तीर कहा कि यह योवन वन निदय है।  
परिणत मुझे आपकी दुआर नहीं चिन्ता तो मैं वस्तुस्थिति का नहीं  
सम्भला और न मैं जानती कि मैं क्या हूँ ? मेरे माँ में परिताप ही  
निता = मैं उमका साथ ही विवाह करूँगी।

वह अपनी आत्मा का पाउनी नृद चली गई।

अनाम ने हृदय गाथा यह सिफ हूँ। मुझे अपमानित करने का  
प्रेम। वह यह जिन्ना भी क्या ?

## अठारह

आज दूसरे दिन ही माहि-जन्म की गाणी में अनाम की स्त्री से  
नैरे हो गई। माहि-जन्म का साधारण मना थी जहाँ बाद भी बड़ा सठ  
नहीं पाना था लेकिन उस दिन स्त्री के भागमन पर रणछाड़ बाँट आता  
और रणछाड़ बाँट के भागमन पर चाय-पार्टी का आयोजन भी रखा गया।

सभा में कई भाहित्यकारों ने अपनी अपनी रचनाएँ सुनाई। इन्दु ने अपनी नई कहानी सम्मान की भूख सुनाई जिसका विषय प्रच्छन्न रूप में अनाम पर व्यप्य करता ही था। अनाम का बहुत बुरा लगा और उसने उसी समय मन ही मन निश्चय किया कि वह शीघ्र ही उस चित्र का छपाकर उसकी मनो दशा का सही चित्रण प्रस्तुत करेगा।

सभा की समाप्ति के बाद अनाम ने इन्दु से कुछ बातचीत करने के लिए समय मांगा। रणछाड़ बाबू ने बीच में अवरोध उत्पन्न करके कहा नहीं अभी आप मेरे घर खाना खाने चलती।

अनाम का उस उत्तर से आघात लगा। इन्दु उसकी समझती हुई बोली मैं अभी खाना खाकर आती हूँ। तुम भिन्नान्न भंडार में मरी प्रतीक्षा करना।

इन्दु उपनगर चली गई।

मनाज ने समीप आकर कहा वधु चिड़िया हाथ में गद्द। अब क्या हाथ मल रहे हैं ?

अनाम ने जलनी दृष्टि से उम दगा और बिना प्रयत्न किए वहाँ से चले गयी। अनाम ने भाकर वह बैठ गया। गायन लगा इन्दु क्या बोल गई है। मैं उसका कौन-सा अपराध किया है। वह कहा जानती कि मैं उम चिन्ता प्यार करता हूँ ? उमर स्मृति पत्र पर खिन्न की बीबपर आकर पिया का नायिका पद्य गई। वह उस मनिष के प्रेम में उमरा थी और वह कायर मनिष कभी उमर दूर-दूर भागना था और कभी नजदीक आता था। बचन कल्याणजित्त बंधन। कहा इन्दु मुझे प्यार करती है। उमर मनाज से जो प्रतिष्ठा और मान पाया है उस में मनाज से। उमरी मना गुप्त कल्याणिया एक नरक में मरी निमा है। विनाय रूप में उमर मन्द का निष कल्याणिया का धरा है न। है व मना भरा है धरा। और आन दगा मुझे छापर धरती इन्द्रा बाबू मास्त्राग, राधाट्टा

आत्मी बमाखी पर

मायोगम जस तयाकियन मेठिया-माहित्य सेवका और साहित्य प्रेमियों के साथ बच्चे हात्ता म भाज का सम्मान प्राप्त करती है ?

वह कटु स्मृतिया से उद्विग्न हो उठा ।

तब उस दयालु पर गुम्हा आया । अपनी मा और परिवार वाला पर राप आया और रोप आया अपने आप पर ।

क्या उसने कटु का रणजो वाबू में मिलाया ? यदि वह उसमें मिलाता ही नहा तो आज इन्हु क पल नहीं गत । वह एक साधारण अध्यापिका होकर दाना मरम, सम्मानप्रिय और घटनामय जीवन नहीं गुजारती ।

अकस्मात् उसे अपनी एक मून और याद आई । यदि वह इन्हु को धीरे-धीरे माहित्य में म लाना और उसकी प्रतिष्ठा में रुग्ण बढि बगना तो वह उसका वाबू से जाहर नहीं जाती । और उसे कम तरह दुखी नहीं होना पडना । किन्तु आज वह इन्हु से स्फट गगन म स्थिति क बारे में मुनता चाहता । वह चाहता कि इन्हु उसे साफ-साफ बनावे कि वह उसे प्यार करती है या नहा ।

इस प्रकार अन्तर्द्व द्व को अपने मन में लिए वह मिटान मगर में आया मगर में प्रवेश करने ही सबरी दृष्टि उसकी आत्मी पर पडी । कुछ व्यक्तिया न आपस में बातचीत की । अनाम को उनकी भगिमा से यही लगा जस के उसके बार में ही बचा कर रहे है । अनाम न घुणा से उन व्यक्तियों को देखकर मन ही-मन कहा माना की टांगें हा टूट जाय ।

वह एक मेज पर बठ गया । बच्चे पर उसके जो धना बन्ध रहा था उसमें म उसमें अपना छपा नया चित्र निवातकर गया ताकि समीर बठ आत्मीया का ध्यान उसकी धार पाण और उ ह पना नही कि यह आत्मी गमन कर है पर है बलाकार । ताकि कुछ पान पूव उनका आवा न जिस कृपा से उग दया था उ । आता म सम्मान का छाया न करने मगे ।



अनामा बनायी पर

अनाम क कुछ कहने के पूव ही शूद्र पुन वाली मुक्त साहित्य से  
हर्षित नगाव नहा ह। वह मरी एक हागी है। तुम्हारी सगति से वह मेरे  
बावन का लभ्य बनन लगा है, जिस म भाज फिर उसी ह्म म लानर छाड  
हो २।

मक वा न दाना चुपचाप बठे रह।

अनाम आवा मर स्वर म बोला तुमने मरे साथ विश्वासघात किया।  
पहन क्या नहा कहा कि तुम बन् नहीं हो जो मैं समझ रहा हू। तुमम  
स्वाय की इतनी घणित मनावति हागी इसरा मुझे स्वप्न म भी खयाल  
नहा था। क्या तुम जीवन मर विवाह नहीं करायी ?

यह मैं अभी कैसे कह सकती हू लेकिन मैं तुमसे विवाह नहा करूगी  
यह मरा अनिम निणय ह।

लेकिन क्या ?

ह रूत्री अपने परिवार म प्रतिष्ठा की कामना रखती है और तुम्हारे  
घर बाव ता अभी से मुझे बश्या कहन लग हैं।

जब व दाना बहा से चले तब दोना प्याला की चाय पत्ते की हवा स  
बाप रही थी। किसी ने भी चाय हाठा से नहीं लगाई। दाना गहर तनावा  
म गिरे थ।

## उन्नीस

अनाम शूद्र को अपने हृदय पटन से नहीं मिटा सका। शूद्र ने स्थिति  
को स्पष्ट कर दिया था किन्तु अनाम का उसपर विश्वास नहीं टूटा। उसे  
नेगा कि यह उसकी मूल मा व पत्र की प्रतिक्रिया है। यह सब आवा म  
नहा गया किसी त्रास पाई युवनी का प्रनाप है। इसपर अतमन म विश्वास



आदमी बसाती पर  
नाची। उसे बीमार बाप की खासी सुनाई पड़ी। मा का दुखा से भरा  
जजर शरीर दिखा। वह बाप उठा उसे लगा, इन दुखा का जिम्मेवार  
है बबल बह।

बापों देर तक वह सघप म पडा रहा। तब वह दयाल व पाम गया  
उससे कुछ रुपये उधार लिए। दयाल न हसकर कहा अब तुम पत्रे  
कलाकार बन हो। देवा भरे रुपये बायदे के अनुमार लौटा देना अन्यथा म  
भूत की तरह तुम्हारे पास आ पहुँचूंगा।  
अनाम निरंतर रहा।

तुम्हारी इंदु गीघ ही महारानी बनगी राधाट्टण महाराज की  
हृदय सप्राप्ती। वह एक बडौल हसी हसा।  
अनाम न बाई उत्तर नही दिया।

बचारी भलो का हिसाब कर देना उस भरा व्याज देना है। भूतन  
मत। दयान फिर एक निरपरा हसी हसा।  
हैलान पर दस्तखत करके अनाम घर आया और अनामिरा को कहा

वह उसका मामान बाय दे वह घर जा रहा है। जितना पर्नीकर है उन  
वह स्वयं ल जाए और पना बचकर वह अपना प्यवा अना करे।  
अपनी मा का प्य अमागी का प्रणाम कहता। मैं कभी-कभी

आपका उपपत्ति लिए प्य अमागी हाथि कप पट्टा हागा। अनामिरा  
न क न स्वर म कहा। उसरी आगे भर आ।  
अनी भला मनप्य का अपना जिम्मेवारीया न नही मागता आनि।

यह पनायन बन्तुन एक छन है। मैं तिम चाहा व मुम न। मिता।  
और इन् ?  
व मा मुम न। मिता मैं उसका बाय्य न। ह। भगदा ह।

आ। म मण्डपन का भूतान क तिम मैं भवता भूतानिया मरिन प  
मय निमम रूप न दूसरा का या न। भला। तुमन मुमपर बह

एक निए, कभी बदला चुकाऊंगा ।'

इला की आँखें भीग गई ।

अनाम बन गया । बरदा आई । बरदा की जगह उसे सरोज का मुख  
'मा'। नकी आँखा में आसू आ गए । वह जल्दी जल्दी नीचे उतर गया ।

राज 'मैं बयाला की 'खट-खट' सुनती रही ।

'एक घंटा बाद इंदु अनाम के घर आई । वह अत्यन्त उद्विग्न  
'विनामनी थी । उसने आते ही बरदा से पूछा 'अनाम बाबू कहाँ हैं ?'

व बर गए । बरदा ने छोटा-सा उत्तर दिया ।

'कहाँ ?

'अन घर । उनकी मा बीमार है ।

'व सोचें ?

'आप कमी नहीं । व थड़े दुखी थे ।

'ए धार धीरे धीरे बाहर निकली ।

आज राधाकृष्ण ने उसका मजबूत नृत्य स्पष्ट कर दिया था कि उसकी  
'एक मास्टरनी का अनाम घर की बहू नहीं उठा सकती । उसे भी  
'व चरित्र पर पूर्ण विश्वास नहीं है । उसने धूल अनाम और रणछोड  
'नू । उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि इंदु का नाराज नहीं होना  
'गहिरा । वह उम मग्न कुछ दगा । उम सम्भावित बनाएगा उसके  
'अनाम छापगा दगा दगा । मिया पता नहीं उठा सकता ।

तब इंदु की आँखा में आसू आ गए । उम जगा कि यह सामाजिकी  
'अनाम की आँखा नहीं समझती । उमने अनाम का छाहकर राधाकृष्ण  
'राधा पर राधाकृष्ण उमने क्या चाँगा ? उम उमने मुन्ना सुनती  
'मिड मगनी है । 'छाह' मगनी बनन की प्रवचनार्थी हाँ । घर व  
'बान व मगनी नागिन-मा बनगती हुई मगनी पर मगनी व मगनी व मगनी  
'बाई दगा दगा दगा है ।

उसनी आत्मा के आग अनाम की भूति थी एक बैस  
 वाला युवक । प्यासा और दुखी ।  
 खट-खट पट की वहा चिर परिचित ध्वनि ।।  
 उसने भावावेश म चाहा कि वह दौडकर उम ध्व  
 की धडकना म आत्मसात कर ले । इस पवित्र विचार  
 म नया जोश भर गया और उसका हृदय नये आलास  
 उस लगा उसके पय की बशी बज उठी है और प्रत्यक  
 निर्दोष फूल की तरह महक रहा है । और वह पीछ म  
 गयी ।

